

# ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15

अंक-7

जुलाई-1, 2014

पाक्षिक

माउण्ट आबू

₹ 8.00



**श्रुतिवन।** अनिलभाई टी. पटेल, अध्यक्ष गणपत युनिवर्सिटी को शिक्षा विभूषण से सम्मानित करते हुए ब.कु. सरला, क्षेत्रीय संचालिका, गुजरात, ब.कु. करुणा, उपाध्यक्ष मीडिया प्रभाग, ब.कु. मृत्युंजय, उपाध्यक्ष शिक्षा प्रभाग।

## भौतिकवादिता ने मनुष्य की सुख, शान्ति छीन ली- ब.कु.मीना

**हरिद्वार।** हर व्यक्ति अपने जीवन में सुख, शान्ति, आनंद, समृद्धि और स्वास्थ्य चाहता है। उनका ऐसा सोचना एवं चाहना स्वाभाविक भी है क्योंकि यह सब कुछ जीवात्मा के मूल गुण हैं परन्तु विडम्बना यह है कि सबकुछ चाहते हुए भी अधिकांश लोग अशांत और तनावयुक्त जीवन व्यतीत कर रहे हैं क्योंकि पूंजीवादिता, भौतिकवादिता ने मनुष्य की सुख, शान्ति और सन्तुष्टता छीन ली है। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'श्रेष्ठ मूल्यों की स्थापना द्वारा खुशनुमा जीवन जीने की कला' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी ब.कु. मीना ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि साधन सम्पन्न लोग भी मानसिक तनाव से पीड़ित हैं और यह मानसिक तनाव जब चरम सीमा पर पहुंच जाता है तब यह मानसिक तनाव हमारी शारीरिक पद्धतियों की आंतरिक रचना एवं कार्यप्रणाली को प्रभावित करके

अनेक प्रकार के मानसिक एवं शारीरिक रोगों को जन्म देता है। उन्होंने आगे कहा कि तनाव से छुटकारा पाना बहुत जरूरी है क्योंकि चिंता तो व्यक्ति को हर समय जलाती रहती है। इसका समाधान भी व्यक्ति को निहित कारणों के निराकरण से ही करना है। इसके लिए हम एकान्त में बैठकर अंतर्मुखी बन अपनी समस्या पर विचार करें। कुछ समस्याएं व घटनाएं ऐसी होती हैं जो प्रयास करने से, आपसी बातचीत और दूसरों के सहयोग से हल हो जाती हैं। इसके विपरीत कुछ घटनाएं ऐसी घट जाती हैं जिनका भरसक प्रयास करने पर भी कोई हल नहीं निकलता। ऐसी परिस्थिति में ना तो भागना है, ना ही घुटने टेकने हैं और ना ही घबराना है। केवल शुद्ध विचार, सही दृष्टिकोण द्वारा स्व-परिवर्तन से ही हम तनावमुक्त जीवन की ओर अग्रसर हो सकते हैं। अध्यात्महीन - शेष पेज 6 पर...



**हरिद्वार।** डॉ. आदित्य नारायण पाण्डेय, प्रधानाचार्य, राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, ब.कु. मीना, महामण्डलेश्वर स्वामी आनंद चेतन जी महाराज, अध्यक्ष, आनंद कृष्णधाम कनखल।

मूल्य आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने पर सभी की सहमति।

## व्यावहारिक शिक्षा पर ज़ोर देना समय की मांग



**ज्ञानसरोवर।** कार्यक्रम में मंचासीन ब.कु. डॉ. हरीश, प्रो. राधेश्याम शर्मा, कुलपति, सिरसा सीडीएल यूनिवर्सिटी, ब.कु. मृत्युंजय, ब.कु. डॉ. निर्मला, प्रो. एस. रतना कुमारी, कुलपति, तिरुपति श्रीपद्मावती महिला विश्वविद्यालय, ब.कु. शीलू।

**ज्ञानसरोवर।** समाज में मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए मूल्य आधारित शैक्षणिक पाठ्यक्रमों की व्यावहारिक शिक्षा पर ज़ोर देना समय और परिस्थितियों की बलवती मांग है। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज के शिक्षा सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन में प्रो. राधेश्याम शर्मा, कुलपति, सिरसा सीडीएल यूनिवर्सिटी ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि शिक्षा का अर्थ

स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर डिग्री प्राप्त करना ही नहीं है, बल्कि ज़रूरत इस बात की है कि लोगों में जनजागृति लाकर उन्हें जीवन का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाए। मूल्यों की गिरावट के माहौल में मनुष्य अपनी पहचान कैसे बरकरार रखे इस पर गहन चिंतन की ज़रूरत है। प्रो. एस. रतना कुमारी, कुलपति, तिरुपति श्रीपद्मावती महिला विश्वविद्यालय ने

कहा कि मूल्यविहीन शिक्षा स्वयं ही अर्थ विहीन हो जाती है।

ब.कु. डॉ. निर्मला, निदेशिका, ज्ञानसरोवर ने कहा कि नई पीढ़ी के उत्थान के लिए शिक्षकों को स्वयं में मूल्यों का समावेश करने के साथ निजी व सामूहिक तौर पर चिंतन करने की ज़रूरत है। समाज में दिखाई देती विसंगतियों को दूर करने के लिए वृहत स्तर पर जनजागृति - शेष पेज 8 पर...

## मनुष्य खुद कर्मों के ज़िम्मेवार-शिवानी



**वलसाड।** कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब.कु. रंजन, ब.कु. शिवानी, मेयर सोनल सोलंकी, ब.कु. रोहित तथा विधायक भरत पटेल।

**वलसाड।** इस संसार में जो कुछ भी हो रहा है क्या वह भगवान की ही मर्जी से हो रहा है? क्या आप यहाँ आए हैं वह भगवान की मर्जी से आए हैं? नहीं।

हमारे कर्मों के ज़िम्मेवार हम खुद हैं, इसलिए हमें श्रेष्ठ कर्म करते हुए लोगों को दुआएँ कमाना हैं, न कि धन। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'कर्म और

भाग्य' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में जनसभा को सम्बोधित करते हुए ब.कु. शिवानी ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि - शेष पेज 8 पर...

# नशाखोरी रोकने के लिए लोगों को जागरूक करना जरूरी..

**रायपुर।** मनुष्यों के लिए नशाखोरी एक अभिशाप के समान है। समाज में नशाखोरी की समस्या को खत्म करने के लिए लोगों को जागरूक करना जरूरी है। विशेषकर तम्बाकू से होने वाले नुकसान के बारे में सचेत करके ही लोगों को इसके सेवन से बचाया जा सकता है।

उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज द्वारा तम्बाकू निषेध दिवस पर आयोजित 'नशा मुक्ति आध्यात्मिक प्रदर्शनी का शुभारंभ करने के पश्चात् बी.वी.टी. राव, मुख्य स्टेशन प्रबंधक, रेलवे ने व्यक्त किये। उन्होंने प्रदर्शनी को प्रशंसा करते हुए कहा कि नशाखोरी करना मौत को निमंत्रण देना है। यह प्रदर्शनी यात्रियों के लिए प्रेरणादायक है। ऐसी प्रदर्शनियाँ निरंतर आयोजित होती रहनी चाहिए। रेलवे स्टेशन ऐसी जगह है जहाँ पर प्रतिदिन हजारों लोगों का आना-जाना होता है, ऐसी



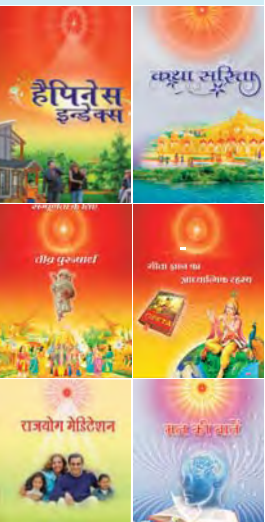
**रायपुर।** ब्रह्माकुमारीज द्वारा तम्बाकू निषेध दिवस पर आयोजित 'नशा मुक्ति आध्यात्मिक प्रदर्शनी का शुभारंभ करते हुए बी.वी.टी. राव, मुख्य स्टेशन प्रबंधक, ब्र.कु.सविता तथा रेलवे में कार्य करने वाले सहायक कर्मों।

जगह पर नशा मुक्ति आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन करने से निश्चित रूप से हजारों यात्रियों को प्रेरणा मिलेगी।

## PEACE OF MIND - TV CHANNEL

**Cable network service**  
"C" Band with Mpeg4 receiver  
Frequency:4054,  
Polarisation:Horizontal, Degree: 83  
Symbol:13230, Satellite:INSAT 4A,  
Peace of Mind: (Vision Shiksha)  
**DTH Services**  
Videocon D2H: Channel no. 497,  
Reliance Big TV: Channel no. 171  
**Smart Phone Service**  
Android | Blackberry | iPhone | iPad  
Tablet | Visit: <http://pmtv.in>  
**Mobile Audio Service**  
Airtel - 55231 - Rs.2 per day  
Vodafone - 552013 - Rs 1 per day  
Reliance - 56300123 Rs 1 per day  
आगर आप पीस ऑफ माइण्ड चैनल चालू करवाना चाहते हैं तो अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9414511111, 8104777111

**सूचना-**ओम शान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने व पत्रकारिता के अनुभवी भाइयों की आवश्यकता है। ई.मेल, वेबसाइट तथा सोफ्टवेयर की भी जानकारी हो। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें-  
Email- [mediabkm@gmail.com](mailto:mediabkm@gmail.com)  
M-8107119445



**प्रश्न:-** मैं एक छोटी ब्रह्माकुमारी हूँ, छोटी-छोटी बातों में उलझ जाती हूँ, व्यर्थ संकल्प तेज चलते हैं। छोटी परिस्थितियाँ भी बड़ी लगती हैं, संतुष्ट नहीं रह पाती। इन सभी बातों से छुटकारा पाने के लिए क्या पुरुषार्थ करें...?

**उत्तर:-** सबसे अच्छी बात है कि आपको अपनी स्थिति का ज्ञान है, जबकि अन्य कई तो स्वयं को ही राइट समझते हैं। निःसन्देह यह स्थिति अति कमजोर स्थिति है। ऐसी स्थिति से तो कोई भी मनुष्य संतुष्ट नहीं रह सकता और न ही उसका ये संगमयुगी जीवन सफल होता है। स्वयं के विचारों को महान् बनाना है व योगबल से अपनी स्थिति को शक्तिशाली बनानी है। स्वयं को एक रस व अमल अडोल बनाने के लिए आँख खुलते ही ये संकल्प अन्तर्मन में कई बार भरें... मैं एक महान् आत्मा हूँ... मुझे भगवान मिल गये, मुझे संपूर्ण सत्य ज्ञान मिल गया, मैं तो सबको उलझान मिटाने वाली हूँ... मैं शिव-शक्ति हूँ... ये परिस्थितियाँ मेरे सामने कुछ भी नहीं है... मैं तो त्यागी हूँ, तपस्वी हूँ। पहले 10 मिनट बार-बार ये संकल्प करें... इसे 21 दिन तक अवश्य करें। सारे दिन में प्रति घंटा दो बार स्वमान याद करे... मैं महान आत्मा हूँ और मैं मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ... इससे आपका चित्त शांत हो जायेगा। जितना-जितना स्वमान बढ़ेगा... आप बड़ी बनती जायेगी व परिस्थितियाँ कमजोर पड़ती जायेगी।

**प्रश्न:-** कई बार मुरली की धारणा करने में संकोच रहता है कि कहीं धारणा कर, पूरा न कर सका तो... 100 गुणा पाप तो नहीं लग जायेगा। क्या धारणा की प्रतिज्ञा कर उसे पूरा न करने से ज्यादा पाप, उसे बिचकुल न धारण करने से लगता है? मैं डबल माई-ड रहता हूँ कि धारणा करू या न करू?

**उत्तर:-** आपका स्वयं में संशय आपको शक्तिहीन कर रहा है। प्रतिज्ञा में बल होता है व परमात्म बल मिलता है। धारणा ही नहीं करेगें तो पतित हो रह जायेंगे, पावन कभी भी नहीं बन पायेंगे। 100 गुणा पाप का भय 1000 गुणा पाप करता है। इसलिए इस विश्वास से सबकुछ धारण करो कि अब मुझे इस धारणा से कोई हटा नहीं सकता क्योंकि मेरे साथ परमात्म बल है। धारणा के बीज को योग का पानी भी दो। बिना योग अभ्यास के बुद्धि शुद्ध नहीं होती व



विना बुद्धि के शुद्ध हुए धारणा भी नहीं होगी। स्वयं भगवान का आना हुआ है, हम आत्माओं को सबकुछ धारण कराने। उसने ही कहा है, पवित्र बनने की प्रतिज्ञा करो। सो करनी है। पहले ही प्रतिज्ञा टूटने का भ्रम नहीं पालना है। जितने दिन भी अच्छी धारणा रहेगी, उतना ही श्रेष्ठ भाग्य बनेगा। प्रतिज्ञा टूटने के भय से धारणा ही न करना अति कमजोर आत्मा की निशानी है, परन्तु आप तो मास्टर सर्व शक्तिवान हो। **प्रश्न:-** मेरा एक 16 वर्षीय भाई है। मैं चाहता हूँ कि वह संपूर्ण पवित्र बने, बुरे संग में आकर कलियुगी युवक न बने, मैं उसे कैसे मदद कर सकता हूँ?

**उत्तर:-** आपके मन में आपके भाई के प्रति यह शुभ-भावना प्रशंसनीय है क्योंकि आजकल तमोप्रधान समय है, वातावरण ही तामसिक है, युवकों का उससे मुक्त रहना... सहज काम नहीं है। उसका पवित्र रहना, उस पर ही निर्भर करेगा। उसे ज्ञान-योग कितना अच्छा लगता है, उस पर सारा आधार है। फिर

भी आप उन्हें ज्ञान दें, योगी बनायें और सात्विक भोजन खिलायें। घर के माहौल को सात्विक बनायें। घर में सत्य साहित्य ही हो। जब भी आप उसे देखें तो इस दृष्टि से देखें कि वो एक पवित्र आत्मा है, इससे उसे काफी मदद व बल प्राप्त होगा। हो सके तो प्रतिदिन उसे आधा घंटा योग का दान अवश्य दें।

**प्रश्न:-** भगवान को किसने बनाया और उसने ये ऐसा संसार क्यों बनाया? क्या इस दुनिया को देखकर भगवान को दुःख नहीं होता, यदि होता है तो वह सबके दुःख दूर क्यों नहीं करता? क्या सभी को दुःखी देखकर उसे मजा आता है?

**उत्तर:-** हमें पहले ये जानना चाहिए कि हमें किसने बनाया है? प्यारे बन्धु... आत्मा, परमात्मा व प्रकृति तीनों ही अविनाशी सत्ता है, इनका कोई निर्माण नहीं करता अतः यह प्रश्न ही गलत है। भगवान ने यह संसार नहीं बनाया। उसने जब यह संसार बनाया तो दुनिया स्वर्ग थी और मनुष्य देवता था, वहां दुःख, अशांति शब्द ही नहीं थे, सबकुछ सम्पूर्ण था। अब जो दुनिया का हाल है, यह पांच विकारों के कारण हुआ है। दुःख मनुष्य के पाप कर्मों का फल है। यह दुःखी संसार भगवान की नहीं, माया अर्थात् पांच विकारों की रचना है। अपने वत्सो को दुःखी देखकर भगवान अब इस धरा पर आया है और वह सत्य ज्ञान दे रहा है। उसे पाकर ही दुःख समाप्त हो जाता है। दूसरों के दुःखों में भगवान दुःखी नहीं होता, बल्कि उसे रहम आता है। आप भी उसका ज्ञान लेकर दुःखों से मुक्त हो जाओ। भगवान को यह दुःखी दुनिया देखकर मजा नहीं आता, वह तो दुःख-हर्ता है, अब सबके दुःख हरने आया है और महाविनाश के द्वारा इस दुःखी दुनिया को समाप्त कर देगा और धरा पर देव-युग का आरम्भ होगा।

ब्र.कु. सविता, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्रह्माकुमारीज ने कहा कि हमारा शरीर एक मंदिर के समान है जिसमें चैतन्य आत्मा विराजमान रहती है, अतः हमें दुर्व्यसनों का सेवन कर इस मंदिर को अपवित्र नहीं करना चाहिए। उन्होंने बताया कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा किए गए सर्वेक्षण के मुताबिक नशाखोरी करने वाले लोगों में 75 प्रतिशत संख्या ऐसे युवकों की पाई गई जिनकी उम्र 25 वर्ष से कम थी।

उन्होंने युवाओं को नशाखोरी से बचाने के लिए अभिभावकों को सुझाव देते हुए कहा कि अपने सभी बच्चों को समान रूप से स्नेह दें। अपने बच्चों के लिए प्रतिदिन समय निकालकर थोड़ा समय उनके साथ व्यतीत करें, घर में नशे को कोई भी सामग्री नहीं रखें और स्वयं व्यसनों से मुक्त जीवन अपनाकर अपने बच्चों के आगे अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करें।

**प्रश्न:-** कई लोग मोक्ष चाहते हैं, कोई मुक्ति के मुमुक्षु हैं। कोई कहते हैं कि आत्मा परमात्मा में लीन हो जायेगी तो कोई कहते हैं मुक्ति से लौटना पड़ेगा। कोई कहते हैं मुक्ति में हम परमात्मा के साथ रहते हैं, वहां परमानन्द है तो कोई कहते हैं कि वहां कोई अनुभूति नहीं है - सत्य क्या है?

**उत्तर:-** एक बार हमने किसी मुक्ति प्रेमी से पूछा कि आप मुक्ति क्यों चाहते हैं तो बोले मुक्ति में हम परमात्म के समीप परमानन्द में रहेंगे, इसलिए मुक्ति चाहते हैं। हमने पूछा कि आप तो कहते हो कि भगवान हमारा अन्दर ही है, तब उसे छोड़कर आप कहाँ उसके समीप जाओगे? बेचारे विचार मन हो गये। जबकि स्वयं भगवान को भी इस धरा पर आना पड़ता है अर्थात् उसे भी मोक्ष नहीं है, तब भला अन्य को मोक्ष कैसे मिलेगा? आत्मा एक्टर है, वह बिना एक्टर नहीं रह सकता और यदि आत्मा, परमात्मा में लीन हो जाए तो आत्मा का अस्तित्व ही लोप हो जाए, जबकि आत्मा अविनाशी है उसका अस्तित्व सदा ही है। वास्तव में आत्मा मुक्ति में मुक्तिधाम में परमात्मा के पास ही रहती है, वहां क्योंकि आत्मा, शरीर रहित है, इसलिए उसकी ही और बुद्धि निष्क्रिय रहती है, यही कारण है कि वहां कोई अनुभव नहीं है, परन्तु सभी में दिव्य अनुभूति समाई रहती है। यदि किसी ने आम खाया ही न हो, तो वह कैसे बतायेगा कि आम कितना स्वादिष्ट है। यदि मुक्ति से कोई लौटकर ही न आता तो किसने बताया कि मुक्ति पाना सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है। सत्य यही है कि सभी को मुक्ति से लौटना ही होता है, सबका मुक्ति काल भी अलग-अलग होता है। अब मुक्ति दाता स्वयं सभी को मुक्तिधाम ले जाने के लिए आया है।

# सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

**स्वमान- मैं इस धरा पर शांति और पवित्रता का अवतार हूँ।**

जैसे भगवान इस धरा पर अवतरित हुए हैं, वैसे ही मैंने भी इस धरा पर अवतार लिया है... मैं शांति और पवित्रता के स्थापनाार्थ अवतरित हुआ हूँ... इस धरा की अशांति और अपवित्रता मुझे प्रभावित नहीं कर सकती...। मुझे सतत् शांति और पवित्रता का प्रवाह सारे संसार में फैल रहा है...।

**योगाभ्यास - अ.** अमृतवले से लेकर रात्रि तक रोज दस बार इस स्वमान को बहुत गहराई से अपनी फोहलिंग में लायें कि मैं इस धरा पर अवतार हूँ।

**व.** रोज कम से कम एक बार एकांत में जाकर अपने आप से बातें करें- संगमयुग में मैं भगवान से क्या-क्या प्राप्त कर सकता हूँ... क्या संगमयुग में मैं वही कर रहा हूँ जो मुझे करना चाहिए... या मैं, मैं और मेरा के जंजाल में उलझा हुआ हूँ... मैं अपने जमा का खाता बढ़ाता जा रहा हूँ... या व्यर्थ में ही अपने खजानों को नष्ट कर रहा हूँ...?

**स्वमान - मैं मास्टर मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता हूँ।**

**शिवभगवानुवाच -** मुक्ति और जीवनमुक्ति के मास्टर दाता बनने की विधि है - सेकेण्ड में देहभान से मुक्त हो जायें। जैसे इन स्थूल कर्मन्द्रियों को जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें वैसे यूज कर सकते हैं, ऐसे ही मन के ऊपर इतना कंट्रोल हो कि जब चाहें जिस स्थिति में चाहें, जितना समय चाहें, उतना समय एकाग्र हो जायें, अचल हो जायें, इस नए वर्ग में इस होमवर्क पर विशेष अटेंशन दें।

**योगाभ्यास - अ.** मैं आत्मा राजा भृकुटि सिंहासन पर... सभी स्थूल-सूक्ष्म कर्मन्द्रियों मेरे सामने... एक-एक कर्मन्द्रियों से हालचाल पूछें... और उनकी महानताओं को याद दिलायें... फिर योग के द्वारा प्रत्येक कर्मन्द्रियों को प्योर वायब्रेशन्स दें... अनुभव करें कि सभी कर्मन्द्रियों शांत, शीतल और सुगंधित हो रही हैं।

**व.** रूहानी डील - तीनों लोकों को सैर करते हुए स्वयं को एकाग्र करें - कभी मैं फरिश्ता ग्लोब के ऊपर... कभी वतन में बापदादा के

**धारणा -** निष्काम भाव से ईश्वरीय कार्य करें। निष्काम सेवा का बल और पुल पदमगुणा ज्यादा प्राप्त होता है। निष्काम सेवा ही सदा सफल होती है।

**चिन्तन -** कामनायुक्त सेवा से क्या नुकसान है? सेवा में निष्काम कैसे रहे?

**तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति -** प्रिय आत्मन्। हमें सर्व के लिए अपने दृष्टिकोण, अपनी भावनाओं और विचारों को सदा श्रेष्ठ रखना चाहिए, खासकर अपने निकट संबंधियों और साथियों के लिये। यदि आप उनके लिये घृणा, ईर्ष्या या बदले की भावना रखेंगे तो आपके वायब्रेशन्स उनके मन में भी आपके लिये ऐसी ही भावना पैदा करेंगे और बुरी वृत्ति ही आपके आसपास के वायुमण्डल के लिये जिम्मेदार हैं।

सम्मुख...तो कभी परमधाम में ज्ञान सूर्य की किरणों के नीचे...।

**धारणा -** निमित्त भाव। सदा याद रहे - करानहार बाप मुझ करनहार आत्मा द्वारा सेवा करा रहे हैं। मैं आत्मा निमित्त हूँ। निमित्त भाव से निर्माण स्थिति स्वतः ही हो जाती है और निर्माण स्थिति से देहभान स्वतः ही समाप्त हो जाता है।

**चिन्तन -** क्यों आवश्यक है एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाना? कौन-कौन सी बातें हमारी एकाग्रता को भंग करती हैं? एकाग्रता की शक्ति को कैसे बढ़ायें? एकाग्रता के लिये बाबा के महावाक्य।

**तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति -** प्रिय साधकों! एकाग्रता से हमें सर्व शक्तियाँ और सर्व सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। एकाग्रता से एक बाप से सारे संसार की सर्व प्राप्तियों का अनुभव होता है और हर कार्य में सहज सफलता भी प्राप्त होती है। अतः आप सारे दिन में अपने मन-बुद्धि को बार-बार एकाग्र करने का अभ्यास करते रहें।

**परमात्म शक्ति द्वारा होगा मनोविकारों का परिवर्तन**



**कोल्हापुर।** कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. राजू, श्रीरामप्रसाद झंवर, चैयरमैन, झंवर ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज, सुनिता राऊन, मेयर, कोल्हापुर, अस्थिरोग विशेषज्ञ एवं लेखक डॉ. पी.जी. कुलकर्णी, ब्र.कु. सुनंदा, पूजा बिल्डर्स के पारस ओसवाल, उद्योगपति जी.टी. वसाजी, स्मैक के अध्यक्ष सुरेन्द्र जैन, बार एसोसिएशन के अध्यक्ष विवेक घाटगे तथा पूर्व नगरसेविका पद्मजा तिवले।

**कोल्हापुर।** वर्तमान समय दुनिया में अत्याचार, भ्रष्टाचार एवं मनुष्यों के अंदर द्वेष, मत्सर व मनोविकार बढ़ रहे हैं। इसके निवारण हेतु हरेक को शुभ चिन्तन करने की जरूरत है। अपने मन को एकाग्र कर स्वयं का परिवर्तन करें क्योंकि स्व-परिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन हो सकता है।

उक्त उद्घार ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'परमात्म शक्तियों की प्राप्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. राजू, को-ऑर्डिनेटर, ग्राम विकास प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज माउण्ट आबू ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि ग्लोबल

का परिवर्तन करना होगा तभी वो इस उद्देश्य में सफल हो पाएगा। उन्होंने कहा कि इस दिशा में ब्रह्माकुमारीज संस्था का कार्य बहुत ही सराहनीय है।

सुनिता राऊन, मेयर, कोल्हापुर ने कहा कि तन-मन-धन से ब्रह्माकुमारीज संस्था समाजोन्नति के लिए कार्यरत है। लोगों के लिए यह संस्था आशा की किरण है।

सुप्रसिद्ध अस्थिरोग विशेषज्ञ एवं लेखक पी.जी. कुलकर्णी ने कहा कि जनसामान्य को सही दिशा दिखाने का कार्य यह संस्था कर रही है। लोगों के दुगुण नष्ट कर उनके अंदर सद्गुणों को बढ़ाने के लिए यह संस्था अविरत प्रयत्नशील है।

ब्र.कु. सुनंदा ने आये हुए सभी अतिथियों तथा सभा में उपस्थित सभी जनों का स्वागत किया। ब्र.कु. आशा ने सभी को ब्रह्माकुमारीज संस्था की जानकारी देते हुए यहाँ की गतिविधियों से परिचित करवाया।

इस अवसर पर पूजा बिल्डर्स के पारस ओसवाल, उद्योगपति जी.टी. वसाजी, स्मैक के अध्यक्ष सुरेन्द्र जैन, बार एसोसिएशन के अध्यक्ष विवेक घाटगे, पूर्व नगरसेविका पद्मजा तिवले आदि गणमान्यजन उपस्थित थे। सभी उपस्थित मान्यवरो के द्वारा दीप प्रज्वलन कर इस कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। ब्र.कु. सुनिता ने मंच का कुशल संचालन किया तथा सभी का आभार व्यक्त किया।



**अशोकनगर-धुलिया(महा.)।** पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. प्रमिला तथा ब्र.कु. कमला।



**अलकापुरी-बड़ौदा(गुज.)।** ओ.एन.जी.सी., सेन्ट्रल वर्कशॉप के स्वर्णजयन्ति के अवसर पर 'वर्क विदाउट स्ट्रेस' विषय पर गेस्ट टॉक करते हुए ब्र.कु. नरेन्द्र पटेल। कार्यक्रम में सेन्ट्रल वर्कशॉप के जी.एम. एवं हेड आर.जी. राम, जी.एम. पी.वी. सुवालकर तथा देशभर से आये हुए ओ.एन.जी.सी. के सीनियर एकजीव्यूटिव।



**भोकरदन-महा।** केन्द्रीय राज्य ग्राहक स्वरक्षण मंत्री रावसाहेब पा.दानवेजी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनिता। साथ ही ब्र.कु. लता।



**टिकरापारा-विलासपुर(छ.ग.)।** 12 दिवसीय बाल संस्कार शिविर के समापन समारोह में अभिभावकों को दिव्य उद्बोधन देते हुए ब्र.कु. मंजू। ध्यानपूर्वक सुनते हुए अभिभावकगण।



**दिल्ली-लॉरेन्स रोड।** 'ब्रेन हेल्थ एण्ड फिटनेस' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. सजीव तथा अन्य भाई बहनें।



**वांवड-कोल्हापुर।** नव निर्मित भवन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. दिव्या, ब्र.कु. सुनंदा तथा बी.सी. मालाकर, सह-आयुक्त, इनकमटैक्स, कोल्हापुर।

# “परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन” कार्यक्रम का आयोजन

**जयपुर , वैशाली नगर।** भारत ही वो पवित्र भूमि है जहां स्वयं भगवान नयी दुनिया रचने का भागिरथ कार्य कर रहे हैं। समय परिवर्तन हो रहा है, लेकिन इससे पहले हमें स्वयं का परिवर्तन करना आवश्यक है।

उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ‘परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय’ विषय पर आयोजित कार्यक्रम में दादी रतनमोहिनी ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि भगवान अभी साधारण तन में प्रवेश कर इस धरा को स्वर्ग बनाने का अद्भुत कार्य कर रहे हैं।

मंत्री अरुण चतुर्वेदी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज रिशतों का महत्व, स्नेह और सौहार्द खत्म होते जा रहे हैं। आध्यात्मिकता के द्वारा हम फिर से भारतीय संस्कृति के मूल्यों को सुव्यवस्थित व स्थापित कर पायेंगे। आध्यात्मिकता से ही तनाव, निराशा आदि को खत्म किया जा सकता है।

जस्टिस एस.एन. भार्गव ने अपने उद्बोधन में कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था का मैं हमेशा ही सहयोगी रहा हूँ और सदा रहूँगा। इस देश में, समाज में,



**जयपुर।** ब्र.कु. चंद्रकला, महिला आयोग की अध्यक्ष लाडकुमारी जैन, दादी रतनमोहिनी, मंत्री अरुण चतुर्वेदी, ब्र.कु. सुषमा, माइनोरिटी कमिशन के चेयरमैन जसवीर सिंह, भारत विकास परिषद के उपाध्यक्ष आर.जी. डंगाथच, ब्र.कु. चंद्रिका तथा अन्य।

## ब्रह्माकुमारीज़ युवा प्रभाग की मीटिंग का आयोजन

दादी रतनमोहिनी व ब्र.कु. चंद्रिका, संयोजिका युवा प्रभाग के निर्देशन में हुई मीटिंग में विभिन्न प्रोजेक्ट्स पर चर्चा व प्लेनिंग की गई। इस मीटिंग में विशेष रूप से यूथ एक्सप्रेस ट्रेन के विषय में भी चर्चा हुई। जिसमें युवा सशक्तिकरण, नारी सम्मान के अंतर्गत विषयों एवं परमात्मा का दिव्य संदेश पहुंचाने की योजना पर विचार विमर्श हुआ।

विश्व में परिवर्तन को आगे बढ़ाने का जो कार्य ये संस्था कर रही है, वह सराहनीय है। उन्होंने कहा कि उचित

समय पर इस कार्यक्रम के लिए उचित विषय लिया गया है। विश्व परिवर्तन जल्दी ही लाना है। ब्र.कु.

चंद्रिका, राष्ट्रीय संयोजिका, ब्रह्माकुमारीज़ ने युवाओं का आह्वान किया और कहा कि युवा शक्ति को

सकारात्मक दिशा दिये जाने की आवश्यकता है। युवा अपने चर्म चक्षु को बंद कर अंतर चक्षु खोले और अपनी विशेषता को पहचाने।

ब्र.कु. सुषमा ने कहा कि दिल के सच्चे भाव और भावना द्वारा ही ईश्वरीय परिवार का संचालन हो रहा है और मनुष्य के संस्कार को परिवर्तन करने के लिए मेडिटेशन ही सर्वोत्तम उपाय है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत जयपुर से लगभग 500 गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन कर के किया गया जिसमें विशेष महिला आयोग की अध्यक्ष लाडकुमारी जैन, आइ.ए.एस. एम.एम. जोशी, पार्षद मोहिनी कंवर, माइनोरिटी कमिशन के चेयरमैन जसवीर सिंह, भारत विकास परिषद के उपाध्यक्ष आर.जी. डंगाथच उपस्थित थे। मंच का कुशल संचालन ब्र.कु. जागृति, बल्लम विद्यानगर, गुजरात ने किया।

दादी रतनमोहिनी व ब्र.कु. चंद्रिका, संयोजिका, युवा प्रभाग की उपस्थिति में मीटिंग हुई जिसमें विभिन्न प्रोजेक्ट्स पर चर्चा की गई।

## प्रशासक शासन में लाएं पारदर्शिता

ब्रह्माकुमारीज़ प्रशासक प्रभाग द्वारा त्रिदिवसीय सम्मेलन में विभिन्न विषयों पर हुआ गहन विचार विमर्श।

**ज्ञानसरोवर।** प्रशासन को कसौटी पर खरा उतारने के लिए प्रशासकों की पारदर्शिता भेदभाव रहित होनी चाहिए। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ के प्रशासक प्रभाग द्वारा आयोजित सेमिनार में नेपाल प्रशासक मंत्रालय के संयुक्त सचिव सूर्या प्रसाद शर्मा ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि प्रशासनिक सूझबूझ से ही जनसमस्याओं का समुचित निराकरण होने पर सामाजिक ढांचे को सही दिशा मिल सकती है।

राकेश के.मित्तल, उत्तर प्रदेश समाज कल्याण आयुक्त ने कहा कि प्रशासनिक सेवाएं लोक कल्याण के लिए होती हैं। परिस्थितियों के बदलते परिवेश में लोगों की अपेक्षाओं को पूर्ण करना कठिन कार्य होता है।

अशोक कुमार टारेनिया, एक्ससाईज़ कमिश्नर, ओडिशा ने कहा कि अध्यात्म से ओतप्रोत मनुष्य निरपेक्ष प्रशासन देने में सक्षम होता है, जिससे वह प्रशासनिक कार्यों में बेहतर परिणाम देकर प्रेरणादायी बन जाता है। राकेश मेहता, दिल्ली

चण्डीगढ़ राज्य चुनाव आयुक्त ने कहा कि लोकतंत्र में प्रशासन की भूमिका महत्वपूर्ण है। प्रशासन की सजगता से ही लोगों को विकास का लाभ पहुंचाकर बेहतर सेवाएं दी जा सकती हैं।

संगठन के अतिरिक्त मुख्य सचिव

ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि प्रशासनिक अधिकारियों की जीवनशैली का प्रशासनिक कार्यों पर पूरा प्रभाव पड़ता है। इस सम्मेलन के समापन सत्र में एस. पुजाहरी, उच्च न्यायालय न्यायाधीश, ओडिशा ने कहा कि परिस्थितियों के

बदलते परिवेश में लोगों की अपेक्षाओं को पूर्ण करना कठिन कार्य होता है, लेकिन वे अपने क्षेत्र को, समाज को व राष्ट्र को उन्नति करने में सदैव तत्पर रहकर जनता का दिल जीतकर आशीर्वाद का पात्र बन जाते हैं।

मित्रालाल रेगमी, रेवेन्यु चीफ इन्वेस्टिगेशन ऑफिसर, बुटवल नेपाल ने कहा कि लोकतंत्र में प्रशासन की भूमिका महत्वपूर्ण है। प्रशासन में सफलता का राज मूल्यों में समायोजन है।

ब्र.कु. आशा, अध्यक्ष, प्रशासनिक सेवा प्रभाग ने कहा कि बेहतर व प्रेरणादायी प्रशासन के लिए नीति निर्धारकों का जनता के साथ पारिवारिक माहौल के साथ आपसी समन्वय होना जरूरी है। अध्यात्म से ओतप्रोत मनुष्य निरपेक्ष प्रशासन देने में सक्षम होता है।

वी.के. शर्मा, जीआईपीएल मुख्य अधिकारी अधिशासी ने कहा कि परिस्थितियां दिनोदिन विकराल रूप ग्रहण करती जा रही हैं, ऐसे समय पर दूसरों को आश्रय देने के लिए तथा स्वयं की स्थिति को मजबूत बनाने के लिए लंबे समय से राजयोग के अध्यास को जरूरत है। इस मौके पर प्रशासक सेवा प्रभाग मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. हरीश, प्रभाग सचिव ब्र.कु. शैलेश आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।



**ज्ञानसरोवर।** ब्र.कु. हरीश, ब्र.कु. आशा, अध्यक्ष, प्रशासनिक सेवा प्रभाग, ब्र.कु. बृजमोहन, राकेश के.मित्तल, उत्तर प्रदेश समाज कल्याण आयुक्त, अशोक कुमार टारेनिया, एक्ससाईज़ कमिश्नर, ओडिशा, राकेश मेहता, दिल्ली चण्डीगढ़ राज्य चुनाव आयुक्त।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आवू रोड (राज.)- 307510

सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आवू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/12-14, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2013-14, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 15th June 2014  
संपादक: ब्र.कु. गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु. करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई. आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.वी. प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।



मनुष्य का सारा प्रयत्न दुःखों से मुक्ति के लिए होता है। उसकी सारी कल्पनाएं, सारी योजनाएं, सारे प्रयास केवल दुःख से छुटकारा पाने के लिए होते हैं। अध्यात्म साधना का भी एकमात्र उद्देश्य यही है कि दुःख से पूरा छुटकारा मिल जाए। यदि दुःख मुक्ति नहीं होती है तो अध्यात्म की साधना व्यर्थ है।

दुनिया में लोग कहते हैं कि यदि दुःख से मुक्त होना है तो फिर हम कुछ काम करें। आँखें मूंदकर ध्यान में क्यों बैठें? निकम्मे क्यों बैठें? निकम्मे बैठने से पदार्थों की प्राप्ति नहीं होती और पदार्थों के अभाव में दुःख नहीं मिट सकता। ध्यान में बैठे रहना इस दृष्टि से निकम्पान है। इससे दुःखमुक्ति कैसे हो सकती है?

सभी लोग यह मानते हैं कि परिश्रम के बिना दुःख मिट नहीं सकता। भूख लगती है वह रोटी खाने से मिट जाती है। सर्दी लगती है कपड़े से वह मिट जाती है। भूख दुःख है, सर्दी दुःख है। इसको मिटाने का उपाय है-रोटी और कपड़ा। यह एक वास्तविकता है। यह आज के युग की सच्चाई है। इस वास्तविकता को समझकर हम दुःखों को कम करने का प्रयत्न करें, कष्टों को

पैदा करता है। अधिकांश तनाव आवेग से उत्पन्न होते हैं। तनाव में होने का अर्थ है आवेग में होना और आवेग में होने का अर्थ है तनाव में होना। तनाव से शक्तियां क्षीण

तत्व भी हैं। आयुर्वेद के आचार्यों ने स्पष्टता से लिखा है कि विश्व में ऐसा एक भी पदार्थ नहीं है, जो केवल अमृत हो या केवल विष हो। रोग-निवारण के लिए दवाइयां ली जाती हैं तो क्या इनके साथ शरीर में विष नहीं जाता? दवाई से लाभ है तो हानि भी है। केवल मात्रा-भेद पर हम किसी को फायदेमंद और किसी को हानिकारक मान लेते हैं। हम सुख के नाम पर, प्रियता के नाम पर सारे दुःख झेल रहे हैं।

होती हैं। तनाव की स्थिति में व्यक्ति गालियां देने लग जाता है, चिड़चिड़ा हो जाता है। तनाव में क्या-क्या नहीं होता, जो नहीं होने का होता वह भी हो जाता है।

मानसिक तनाव शारीरिक संतुलन को बिगाड़ देता है। सब कुछ असंतुलित हो जाता है। तनाव से केवल आवेग ही पैदा नहीं होते, बीमारियां भी पैदा हो जाती हैं। शरीर में तनाव पैदा होता है तब रक्त की गति में तौत्रता आ जाती है, हृदय की धड़कन बढ़ जाती है जिससे अनेक प्रकार की परेशानियां उत्पन्न हो जाती हैं। तनाव सारे दुःखों का

समस्या यह है कि सुख का झरना हमारे भीतर बह रहा है और हम उसको खोज बाहर कर रहे हैं। दो प्रकार की खोजें हैं। एक है आवश्यकता-पूर्ति की खोज और दूसरी है सुख की खोज। आवश्यकता की पूर्ति पदार्थ से ही संभव है, अध्यात्म से वह नहीं हो सकती। सुख की प्राप्ति अध्यात्म से ही संभव है, पदार्थ से नहीं हो सकती। आज मनुष्यों ने आवश्यकता-पूर्ति के क्षेत्र को सब कुछ मान लिया है, दुःखों से छुटकारा देने वाला मान लिया। यदि इससे सुख की पूर्ति होती तो आज का व्यक्ति सबसे अधिक सुखी होता। आज विज्ञान ने जितने पदार्थ उपलब्ध कराए हैं, वे अनगिनत हैं फिर भी मनुष्य दुःखी है, उसे सुख नहीं मिला है। बल्कि जिन मनुष्यों को अधिक पदार्थ उपलब्ध हैं, वे ही अधिक पागल होते हैं। वे ही अधिक आत्महत्या करने वाले होते हैं, वे ही अधिक अनिद्रा के शिकार होते हैं। उन लोगों में ही अपराध की वृत्ति अधिक होती है। इन सब रोगों का एक ही कारण है-पदार्थों की अधिक उपलब्धि। अध्यात्म की साधना आवश्यकता-पूर्ति के लिए नहीं है। शरीर है तो उसको कुछ मांगें भी हैं। परिवार है तो उसके प्रति कुछ दायित्व भी है। आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कमाना भी आवश्यक होता है। एक आध्यात्मिक व्यक्ति इस बात से कभी इन्कार नहीं करता किंतु वह उसे मात्र आवश्यकता पूर्ति का साधन मानता है सुख प्राप्ति का नहीं। आध्यात्मिक व्यक्ति कर्म करता है, आजीविका के साधन जुटाता है, किंतु कर्म से जो दुःख उत्पन्न होता था, उस दुःख की भावना से बच जाता है। वह समझ जाता है कि सुख का मार्ग अलग है और आवश्यकता पूर्ति का मार्ग अलग। इस समझ से मानसिक संतुलन प्राप्त होता है। आज के युग की बहुत बड़ी समस्या है मानसिक असंतुलन। मन कभी खुशी से भर जाता है तो कभी दुःख से भर जाता है। कभी यह विश्वास से पूर्ण होता है तो कभी अविश्वास की सारी सीमाएं लांघ जाता है। अध्यात्म-साधना के द्वारा हम मानसिक संतुलन को प्राप्त कर सकते हैं। मानसिक संतुलन का अर्थ है-न राग न द्वेष, केवल समभाव। हम साक्षीदृष्टा बन जाते हैं। सुख की खोज का प्रयोग इतना लाभदायी है कि वह हमारे दैनिक जीवन में बाधा नहीं डालता। वह आवश्यकता पूर्ति के साथ आने वाले विष को धो डालता है, जीवन को पवित्र बनाता है।

**आध्यात्मिक व्यक्ति इच्छा रखने से कभी इन्कार नहीं करता किंतु वह उसे मात्र आवश्यकता पूर्ति का साधन मानता है, सुख प्राप्ति का नहीं।**



मूल है। तनाव से मुक्त होने का अर्थ है- क्रोध से मुक्त होना, मन से मुक्त होना, माया से मुक्त होना तथा लोभ से मुक्त होना। तनाव से ये विकार पैदा होते

मिटाने। यह प्रश्न वे व्यक्ति उठाते हैं, जो यह मानते हैं कि पदार्थ सुख देने वाले हैं। परंतु जो व्यक्ति आध्यात्मिक हैं, उनका कहना है-पदार्थ बीमारी का इलाज करने वाले हैं, किंतु सुख देने वाले नहीं। रोटी खाने से सुख कहाँ मिलता है? पेट में भूख की पीड़ा पैदा होती है और वह रोटी खाते ही कुछ समय के लिए शान्ति हो जाती है। इसे लोगों ने सुख मान लिया है। समय बीतते ही फिर भूख लगती है और पीड़ा प्रारम्भ हो जाती है। फिर रोटी खाते हैं और पीड़ा शांत हो जाती है। यह क्रम जीवनपर्यन्त चलता है। यह कैसा सुख है? यह तो बीमारी हुई। उसकी चिकित्सा की, बीमारी दब गयी।

हैं और विकारों से फिर तनाव होता है यह चक्र चलता ही रहता है और व्यक्ति इस चक्र में फंसा रहता है। वह सारे दुःखों को झेलता जाता है, दुःख भोगता है, पीड़ा अनुभव करता है।

इन बीमारियों का मूल कारण बनता है मन और व्यक्ति दोष देता है शरीर को, शरीर कमजोर है, शरीर के परमाणु रोगग्रस्त हैं आदि। बीमारी मन पैदा कर रहा है और दोषी बन रहा है शरीर। यह कैसा न्याय है ! आज शरीर और मन की बीमारी को संयुक्त नाम दिया गया है-साइकोसोमैटिक अर्थात् मनोदैहिक बीमारी। मनोदैहिक बीमारियां बहुत ही जटिल होती हैं, आज का मानव इनसे ग्रस्त है और उसके कष्ट बढ़ते ही चले जाते हैं। अपने ही अज्ञान के कारण हम इन रोगों को उत्पन्न कर रहे हैं। रोगों का एक निमित्त कारण भोजन भी है। भोजन के विषय में भी हमारा अज्ञान है। वह मिटता है तो बहुत सारे रोग उत्पन्न ही नहीं होते और जो उत्पन्न हो चुके हैं, वे भी धीरे-धीरे नष्ट हो जाते हैं। भोजन से दुःख कम होता है तो बढ़ता भी है। जितने पोषक द्रव्य हैं, उनमें पोषक तत्वों के साथ-साथ अपोषक



**काठमाण्डू-नेपाल।** रानीवारी उपसेवाकेन्द्र के नये भवन का शिलान्यास करते हुए माननीय कानून, न्याय, संविधान सभा तथा संसदीय मामला मंत्री नरहरी आचार्य। साथ हैं ब्र.कु. राज, ब्र.कु. रामसिंह तथा अन्य।



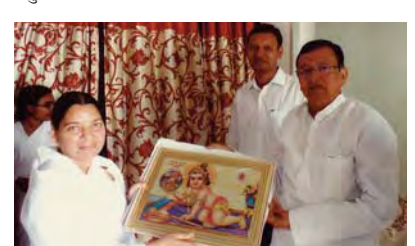
**झालावाड़-राज।** माननीय मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए ब्र.कु. मीना।



**सिविल लाइंस-इटावा।** सेवाकेन्द्र पर आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम के अंतर्गत उ.प्र. भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष सरिता भदौरिया, ब्र.कु. नीलम तथा अन्य।



**कोल्हापुर।** गीता पाठशाला की वर्षगांठ पर केक कटिंग करते हुए श्रीमती खानविलकर, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. प्रतिभा व ब्र.कु. शकुंतला।



**वर्धा-महा।** विधायक सुरेशभाऊ देशमुख को उनके जन्मदिन के अवसर पर ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए ब्र.कु. माधुरी। साथ हैं ब्र.कु. स्वमिनल।



**संगमनेर-महा।** संगमनेर कॉलेज के प्राचार्य डॉ. के.के. देशमुख को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. छोटेलाल। साथ हैं ब्र.कु. भारती व ब्र.कु. पद्मा।

- ब्र.कु. शोभिका, शांतिवन



**दिल्ली।** भारतीय रेलमंत्री सदानंद गौड़ा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. शिविका तथा न्यायाधीश वी. ईश्वररया।



**भोपाल-म.प्र.।** स्वर्णिम जयंती उद्यान, कोलार में आयोजित 'पर्यावरण संरक्षण राजयोग शिविर' में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. किरण।



**कमला नगर-आगरा(उ.प्र.)।** चिल्ड्रेन समर कैम्प के समापन के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. विमला, क्षेत्रीय प्रशासिका, ब्र.कु. नेहा, ब्र.कु. सपना, ब्र.कु. सोमा तथा बच्चे।



**मणिनगर-अहमदाबाद।** सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव के अवसर पर मंचासीन ब्र.कु. हंसा, ब्र.कु. मोहन, मधुसूदन दास जी महाराज, ब्र.कु. नेहा, छगनदास जी महाराज, ब्र.कु. मनोज, ब्र.कु. सविता माता व ब्र.कु. धर्मिन्दा।



**अजमेर-धोलाभाटा।** अमरनाथ की झांकी का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. योगिनी तथा नगर के गणमान्य जन।



**उस्मानाबाद-आनंदनगर।** स्थानीय गो.चा. की ओर से आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में डॉ. गणपट, आर्ट ऑफ लिविंग के कार्यकर्ता, अशोक पवार, सुप्रसिद्ध शिक्षा संचालक, सरस्वती विद्यालय, उस्मानाबाद को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुरेश।

## प्रकृति की पीड़ा

यह विष द्रव्य या मल जिस भी अंग में इकट्ठा हो जाता है, रुक जाता है और उस अंग के नाम के आधार पर रोग का नाम दे दिया जाता है कि हृदय की धमनियों में खराब कोलेस्ट्रॉल के रूप में इकट्ठा हुआ तो उसे हृदय रोग का नाम दे दिया गया। मस्तिष्क की धमनियों में इकट्ठा हुआ तो उसे खून का थक्का जमने के कारण ब्रेन हेमरेज होने का नाम दिया। वहीं गांठ के रूप में इकट्ठा होता गया तो उसे ट्यूमर का नाम दे दिया गया। कहीं पथरी का नाम दे दिया गया। फेफड़ों में सूख गया तो अस्थमा/दमा का नाम दिया गया। इसी प्रकार चमड़ी के रोग, हड्डियों के रोग, कान-नाक-गले के रोग आदि-आदि हजारों नाम दे दिये गये जबकि बात एक ही थी - विषद्रव्य-मल-कचरा इकट्ठा होना। इस सत्य को जानने के बाद लोगों से धरानों की ज़रूरत नहीं है कि इसे वह रोग हो गया या उसे वह रोग हो गया। नाम कितने ही भयंकर, डर पैदा करने वाले क्यों न हों पर अब धरानों की ज़रूरत नहीं है क्योंकि अब हम सभी रोगों का कारण समझ में आ गया है। जब कारण का पता लग गया तो निवारण भी मिल ही जाएगा। अभी तक तो हमारा यह हाल था कि रोग का कारण ही पता नहीं लगता था। आपको एक आश्चर्यजनक बात बताता हूँ। मैं सन

## सदा स्वस्थ जीवन

स्वर्णिम आहार से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की ओर



ब्र.कु. ललित शातिवन

1993 में बड़ौदा में अपनी मौसो के यह रहकर सी.ए. की पढ़ाई कर रहा था। उनका छोटा बच्चा बीमार हो गया। उसें निरंतर 3-4 दिनों तक अस्पताल ले जाया गया। मैंने मौसाजी से पूछा - 'डॉक्टर साहब क्या कहते हैं, अक्कू (आकाश उसका नाम था) को क्या बीमारी हुई है?' तो मौसाजी ने जो उत्तर दिया वह दुःख मिश्रित आश्चर्य पैदा करने वाला था। उन्होंने बताया कि डॉक्टर अलग-अलग प्रकार की दवाइयों का प्रयोग कर रहे हैं, कोई बदल कर देख रहे हैं। रोग जिस भी दवा से ठीक होगा उसके आधार पर पता चलेगा कि उसको कौनसा रोग है!

अब इससे बड़ा अज्ञान क्या हो सकता है! उस बेचारे छोटे से, कोमल से बच्चे पर भयंकर रासायनिक दवाइयों, इंजेक्शनों के प्रयोग किये जा रहे हैं। प्रयास करो और भूल सुधारो की पद्धति से उपचार किया जा रहा था, और ज्यादा विषद्रव्य शरीर में डाले जा रहे थे।

दिव्य जीवन शैली को जो स्वर्णिम आहार पद्धति आपको बताई जा रही है वह पहले हमने

## अपेक्षा व प्राप्त होने वाले परिणाम को खुशी का पैमाना न बनाएं

**प्रश्न:-** लेकिन अब मैं अपने लिए ये कर रहा हूँ।  
**उत्तर:-** मैंने किया क्योंकि मुझे पता था ये करने से मेरे पैरेंट्स को खुशी मिलेगी। लेकिन ये थॉट तो मेरे साथ ही रहा कि इसमें मेरे पैरेंट्स को खुशी भी और इसीलिए मैंने इसे किया।  
**प्रश्न:-** लेकिन आपने सोच-समझकर उस समय किया था। देखो आपने उस चीज़ को एक बार अपना बना लिया तो फिर आपके पैरेंट्स उस समीकरण से बाहर हो जाते हैं। आपने जो निर्णय लिया अपने लाइफ में चाहे वो कैरीयर का है, चाहे वो आपके संबंधों का है फिर उसकी जिम्मेवारी आपको हो जाती है।

**उत्तर:-** मैं एक ऐसे भाई को जानती हूँ जिनका एक लड़की के साथ अच्छा संबंध था। लेकिन उसकी माँ उसे पसंद नहीं करती थी। भले उनके बीच का संबंध प्रगाढ़ था लेकिन अपने पैरेंट्स को खुशी के लिए उसने उसे छोड़ दिया। ऐसा आजकल बहुत सारे बच्चों के साथ होता है। अब भले वो दूसरी तरफ सेट भी हो जाते हैं, उसकी कहीं और शादी भी हो जाती है।

लेकिन वो खुश नहीं होता है क्योंकि उसके माइंड के अंदर यही थॉट होती है कि ये सब मैंने अपनी माँ को खुशी के लिए किया। फिर वो लड़का सोचता है कि मैंने ये सही किया या नहीं किया, लेकिन मेरी खुशी तो वहां थी। और यही थॉट उसके मन में बार-बार आती रहती है कि ये मैंने अपने पैरेंट्स को खुशी के लिए...

इससे क्या होता है कि जितना समय वो थॉट आपके मन में रहेगा आप दुःख में रहेंगे। और फिर वो आपके संबंधों में, आपके पैरेंट्स के साथ, कभी न कभी तो वो सारा बाहर निकल ही आयेगा कि ये मैंने अपनी खुशी के लिए नहीं बल्कि आपकी खुशी के लिए किया। तो इससे हमारे संबंधों पर कितना गहरा असर पड़ता है।

**प्रश्न:-** मेरी अपेक्षाएं उनसे इतनी ज्यादा हो जाती हैं कि मैं उनकी खुशी को परवाह ही नहीं करता हूँ?  
**उत्तर:-** विशेषकर अगर मैंने आपके लिए कुछ किया ये सोचकर कि कभी आप भी मेरे लिए करेंगे। अगर आपने नहीं किया तो मैं कहूंगा ना कि मैंने आपके लिए क्या-क्या किया और मेरी लिस्ट तो मानस पटल पर हमेशा रेडी होती ही है कि मैंने आपके लिए क्या-क्या किया और आपने क्या किया।



ब्र.कु. शिवानी

खुद अपने पर प्रयोग की है, परिणाम देखा है फिर हम आपको बता रहे हैं। परन्तु आधुनिक चिकित्सा विज्ञान नई-नई दवाइयों का प्रयोग पहले कुत्ते, बिल्ली, खरगोश, चूहे, मृगियों आदि पर करते हैं फिर मनुष्य का नम्बर आता है। आधुनिक ज्ञान के नाम पर मनुष्यों के स्वास्थ्य की कब्र खोदी जा रही है। शरीर पर किया जाने वाला यह अत्याचार किसी दानवीय या पार्श्विक वृत्ति से कम नहीं है और प्रकृति भी गिन-गिन कर इसका बदला लेगी।

जयपुर की नीहारिका, उम्र-27 वर्ष, पिछले 10-12 वर्षों से गर्भाशय में गांठ नामक बीमारी से ग्रसित थीं। वजन 60 किलो से भी बढ़ता जा रहा था। शरीर में हार्मोन असन्तुलन से निराशा बढ़ती जा रही थी। एलोपैथी एवं आयुर्वेदिक दवाइयों पर 80,000 रुपये से ज्यादा खर्च हो चुका था। फिर भी कोई राहत नहीं मिली। स्वर्णिम आहार के प्रयोग से 3 मास में 75 प्रतिशत ठीक हो गई हैं। वजन भी आठ किलो कम हो गया है।

तो आइये, स्वर्णिम आहार पद्धति को अपनाकर इन गोली-दवाई-इंजेक्शन-बीमारी-अस्पताल-डॉक्टर-इलाज से मुक्ति पायें और सदा स्वस्थ जीवन का ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त करें।

M - 07791846188  
healthywealthyhappyclub@gmail.com  
संपर्क कर केवल 1pm से 3pm के बीच में

ऐसा यह बहुत करके व्यवसायिक संबंधों में होता है। फिर तो वो खुद भी दर्द में रहेंगे, पैरेंट्स के साथ जो एनर्जी विनिमय होगी वो भी दर्द वाली, फिर आप जिस भी प्रोफेशन में या जहां भी आपके रिश्ते जुड़े होंगे, वहां भी लोग दुःख में रहेंगे। और ये सब इसलिए हो रहा था कि मुझे पैरेंट्स को खुशी देनी है। इतना सारा दुःख-दर्द किस्ट करके क्या आप पैरेंट्स को खुशी दे पायेंगे? नहीं। थोड़ा समय लो अपने आपको समझाओ कि उन्हें खुशी देना, यह हमारा निर्णय है। ये जो अपेक्षाएं हम रखते हैं और उसे पूरा करने के प्रयास में जो सारा दिन लगे हुए हैं। ये भी हमारी स्थिति को ऊपर-नीचे करता है। एक है आप अपेक्षा भले रखो, आप ऐसा करेंगे या नहीं करेंगे, लेकिन मेरी खुशी उस पर निर्भर नहीं है। उससे क्या होगा आप अपेक्षा रखेंगे लेकिन अगर वो पूरी नहीं हो पायी तो आप दुःखी नहीं होंगे। सारी प्रतिक्रिया तब आती है जब हम दुःखी हो जाते हैं। उस समय तो अपेक्षा अलग हो जाती है। लेकिन मैं दुःखी हो गयी तब मैं रियेक्ट करती हूँ। अगर मैं दुःखी नहीं हुई तो रियेक्ट नहीं करूंगी, यदि रियेक्ट नहीं करूंगी तो आपको सशक्त करूंगी। बच्चे को अगर परीक्षा में 90 प्रतिशत मार्क्स नहीं मिला, लेकिन मैं दुःखी नहीं हुई, गुस्सा नहीं किया तो मैं उसे स्वीकार करूंगी, उससे प्यार से बातें करूंगी ताकि वो अगली बार इससे अच्छा परफॉर्मंस दे सके। यदि मैं गुस्सा होकर बोलूँ कि, क्या हम तुम्हारे ऊपर इतनी मेहनत इसलिए करते हैं कि तुम हमारी अपेक्षाओं को पूरा नहीं करो। हमारी यह भाषा उसे उत्साहित नहीं करती है बल्कि उसे और ही हीन भावना से ग्रसित कर देती है। - क्रमशः



**प्रोदातूर-वाय.एम.आर. कालोनी(आ.प्र.)।** फिल्म एक्टर श्रीकांत को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. हेमा।

# अनुशासन से बनाएं जीवन सुन्दर

“जो मनुष्य स्वयं पर नियंत्रण नहीं कर सकता, वह स्वतंत्र नहीं है” ये कहना है दार्शनिक पाइथगोरस का। अर्थात् जब तक मानव अपनी अपेक्षाओं, कामनाओं, इच्छाओं के वशीभूत होकर जीवन जीता है, वह पराधीन और दुःखी रहता है। दूसरों का भी वह मार्गदर्शक नहीं बन सकता और ना ही अच्छा सुशासक। जरूरत है हम सब आत्म-निरीक्षण करें व आत्मा पर पड़े विकारों के बोझ को पहचानें और उसे उतार फेंकें। गीता में परमात्मा ने मनुष्य को लगातार आत्म-निरीक्षण करने हेतु प्रेरित किया है। कई बार व्यक्ति दूसरों के कहने पर उद्दिन हो जाता है और कई दफ्ता अपने कटु चर्चनों से दूसरों को उद्दिन कर देता है। ये दोनों बातें व्यक्तिगत तथा कर्मक्षेत्र दोनों के लिए घातक होती हैं। श्रीकृष्ण इनसे बचते हुए स्वधर्म का पालन करने की भी सलाह देते हैं। मनुष्य को परिस्थिति अनुसार निर्णय लेना चाहिए तभी वो अच्छा सुशासक बन सकता है।

## धर्म व अनुशासन की अध्यात्म में भूमिका

आज हर मनुष्यात्मा इतनी मलिन, अपवित्र व पतित हो गई है कि वह गलत रास्ते अपनाकर एवं चरित्र भी दांव पर लगाकर भौतिक सुख-साधन को सामग्री इकट्ठा करने में लगी है। आदमी मकान तो आलीशान बना रहा है मगर घर नहीं बसा पा रहा है। परिवार के लोगों में आपसी प्रेम व समझ की कमी हो गई है। व्यक्ति की चेतना क्षणिक, संशयपूर्ण तथा तत्कालिकता में केन्द्रित होती जा रही है। आगे बढ़ने और नम्बर वन बनने की प्रतिस्पर्धा में सम्पूर्ण मानव जाति मूल्यों व सिद्धांतों का हास कर रही है जिससे मनुष्य अतृप्त, दुःखी और बेचैन हो गया है। ऐसे में धर्म या अध्यात्म ही ऐसा तत्व है जो मानव को ईच्छाओं तथा कामनाओं को सीमित करने की क्षमता रखता है। धर्म मानवीय सोच को व्यापक बनाता है जो सुशासन के लिए महत्वपूर्ण मंत्र है। आध्यात्मिकता मानव मन में उदारता, सहिष्णुता एवं प्रेम पैदा करती है। समाज में सुशासन स्थापित करने हेतु समाज के सदस्यों में परस्पर प्रेम, सद्भावना, संयम, विश्वास आदि विकसित करना धर्म के बिना संभव नहीं है। जिंदगी में संयम की लगातार आवश्यक है। सांठन तथा समाज में सुशासन लाने से पहले स्वयं के मन, बुद्धि और संस्कारों को नियंत्रित कर खुद को सुशासित करना बेहद जरूरी है। जीवन में सुशासन लाने हेतु चरित्र निर्माण बहुत महत्वपूर्ण है जो अध्यात्म के द्वारा बनाया जा सकता है। धर्म का अनुशासन 'आत्मानुशासन' है। नैतिक मूल्यों का आचरण ही अध्यात्म या धर्म है। यह वह पवित्र अनुष्ठान है जिससे चेतना शुद्ध होती है। आध्यात्मिकता के पथ पर अडिग रहने से व्यक्ति अपने जीवन को मूल्यवान बनाता है। 'मैं एक राजा हूँ क्योंकि मुझे अपने पर शासन करना आता है'- ये कहना है

विचारक पैट्रो अरिटीनो का। धर्म मनुष्य में मानवीय गुणों के विकास में सहयोगिक भूमिका निभाता है जो सुशासन के लिए एकदम जरूरी है। आज के युग ने यह चेतना प्रदान की है कि विकास का रास्ता हमें स्वयं बनाना है। इस संबंध में एस. बी. आई. बैंक, कानपुर (फूलबाग) में कार्यरत मनोज बाजपेयी का मानना है कि "स्वयं को बदलें, क्योंकि हम दूसरों को नहीं बदल सकते। जो गुण संस्कार आप दूसरों में चाह रहे हैं, वह स्वयं में लायें। आत्म-चिंतन-मनन कर मन में सुंदर विचार लायें। नकारात्मक बातों को छोड़ सकारात्मक सोच विकसित करें। इससे कार्यक्षेत्र में भी लोग प्रसन्न रहेंगे तथा जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति होगी।

## कैसे करें चरित्र निर्माण

चरित्र या व्यक्तित्व निर्माण द्वारा ही मनुष्य स्वयं पर शासन करने योग्य बन सकता है। जो खुद को अनुशासित कर अपनी इच्छाओं, कामनाओं व वासनाओं पर नियंत्रण कर लेता है वही सही मायने में सुशासन की स्थापना कर सकता है चाहे फिर वह समाज हो, संगठन हो या देश हो। चरित्र निर्माण करने हेतु निम्नलिखित बातों को अपनायें:-

1. आत्मानुशासित बनें- बुरी आदतों, बुरे मार्ग, बुरी संगत, बुरे विचारों आदि का त्याग करें। मन के कहे अनुसार चलना छोड़कर परिपक्व बनें।
2. स्वार्थी प्रवृत्ति छोड़ें- स्वार्थी प्रवृत्ति सभी बुराइयों तथा गलत कार्यों की ओर दृक्कलती है। स्वार्थीपन हावी होने पर हम कभी कोई सही निर्णय नहीं कर पाते।
3. परखने की शक्ति का इस्तेमाल करें- अच्छा-बुरा एवं सही-गलत को परखने के लिए बुद्धि, विवेक का इस्तेमाल करके ही निर्णय लें। किसी भी वस्तु को जांचने हेतु केवल जो क्या है यह न देखकर यह देखें कि इसको अपनाने से आखिरी परिणाम कैसा होगा। दूरदर्शी दृष्टि से ही चीजों को परखें और निर्णय करें।
4. दृढ़निश्चयी बनें- सभी महत्वपूर्ण मुद्दों पर, अपने पक्ष पर दृढ़तापूर्वक टिके रहें। दृढ़निश्चयी होना चरित्र निर्माण तथा सुशासन का एक बड़ा ही अहम पहलू है। अपने निर्णय सदा बदलने वाले व्यक्ति से दृढ़निश्चयी लोगों को ज़्यादा पसंद किया जाता है।
5. आदतें सुधारें- आदतें हमारे कार्य, रीति, परंपरा से हमें मिलती हैं और जीवन का हिस्सा बन जाती हैं। श्रेष्ठ व उच्च चरित्र निर्माण के लिए अच्छी आदतों को जीवन का हिस्सा बनायें। 6. मीठा व सुन्दर बोलें- बातचीत करने का तरीका प्रभावशाली और स्पष्ट होना चाहिए। किसी भी बात को मन में रखने के बजाय वार्तालाप के जरिए दूसरों से कहनी चाहिए। उत्तेजित होकर दुःअर्थी एवं गंदी भाषा का प्रयोग अच्छे चरित्र वालों को भी नीचे गिरा देते हैं। 7. लक्ष्य निर्धारित कर लक्षण बनाएं- ईश्वर ने हर चीज को एक उद्देश्य के लिए बनाया है। जीवन को यों ही काटने के बजाय लक्ष्य ढूँढ़ें और उसे पाने हेतु मेहनत करें। लक्ष्य निर्धारित करने के बाद

--ब.कु. निधि, कानपुर

वैसे लक्षण अपने चरित्र में लायें। सतयुगी दुनिया में राज्य करने का उद्देश्य पक्का कर सदा खुशी में रहें।

8. रिश्तों में समरसता लाएं- अपने पारिवारिक, सामाजिक, कार्य संबंधी आदि सभी रिश्तों में समरसता व अपनापन लाएं। अपने माता-पिता को आदर, सम्मान एवं प्यार दें और उनकी आज्ञा मांते। पति-पत्नी, बच्चे, दोस्त, सहकर्मी, बॉस इत्यादि सभी के साथ परस्पर प्यार और सौहार्द तथा मधुरता का रिश्ता बनाएं जो एक मज़बूत व्यक्तित्व की पहचान होती है।

## कैसे बनाएं सशक्त शख्सियत

हिम्मत, दृढ़ता, आशावादी नज़रिया, ईमानदारी, कर्मदात्री आदि खूबियाँ मिलाकर एक अच्छा व्यक्तित्व बनता है। चरित्र किसी इंसान के आयाम का वो पहलू है जो उसके बारे में बहुत कुछ बयान करता है। मानव चरित्र तभी उच्च या सशक्त बनता है जब व्यक्ति इच्छाओं व कामनाओं पर अंकुश लगाकर स्वयं पर राज्य करता है, साथ ही जो लोभ-लोलुपता, बिपाशना आदि विकारों के मायाजाल से स्वयं को मुक्त करता है। सशक्त शख्सियत का धनी मनुष्य सभी तरह के पूर्वग्रहों तथा संकल्पों से मुक्त रहकर सभी के लिए प्रेम, सद्भावना, सहनशक्ति तथा आदरभाव रखता है। अपने व्यक्तित्व का सशक्तिकरण करने से मानव को अनेकों लाभ हैं जैसे मज़बूत शख्सियत वाला व्यक्ति मन से हल्का रहकर सभी परिस्थितियों का सामना कर सकता है। उसे अपने जीवन रूपी लक्ष्य को पाने में भी मदद मिलती है। मज़बूत चरित्र है तो हम अपनी हार के कारणों की समीक्षा कर उसे बदलने का साहस रखते हैं। व्यक्तित्व सशक्त बनाने से अपने दोष, कमी-कमजोरियों और गलतियों को स्वीकार करने का हौसला मिलता है जो सुशासन के लिए बेहद खास नुस्खा है। कान्ति शुक्ला बहन जीवन में बेहतर सुशासन के संदर्भ में कहती हैं कि "दूसरों को सुशासन का पाठ पढ़ाने के बजाय पहले हम आदर्शों पर चलें। अपना उदाहरण स्वयं बनकर दिखाएं। स्वयं को बदलना है दूसरों को नहीं। हमारे स्वभाव-संस्कार बहुत कड़े हो चुके हैं परंतु निरंतर प्रयास करने से धीरे-धीरे बदल जायेंगे। जो अच्छी शिक्षा किसी से भी छोटे या बड़े से मिले उसे ग्रहण कर लेना चाहिए तभी सुशासन आएगा।" किसी समाज या देश की समस्याओं का समाधान चरित्र-निर्माण, कर्म-कौशल, व्यवस्था-परिवर्तन, हर व्यक्ति का स्वयं पर शासन, परिश्रम, निष्ठा आदि से संभव है। जब परिवार, स्कूल, समाज, प्रशासन सभी जगह लोग स्वयं के जिम्मेदार एवं सशक्त चरित्र वाले होंगे तभी सुशासन जीवन का अभिन्न हिस्सा बन जाएगा। कहीं भी किसी प्रकार की गड़बड़ी या अशांति नहीं होगी। सुशासन प्रिय होने के लिए हमें स्वयं को प्रेरणा के आधार पर कार्य करना होगा तभी व्यक्ति पशु से ऊपर उठकर वास्तव में मानव बन जाएगा। तब आएगा सुशासन या ईश्वरीय स्वराज्य।



पोखरा-नेपाल। 'ज्ञान सिन्धु' नामक पुस्तक का विमोचन करते हुए ब.कु. करुणा, माउण्ट आबू।



पणजी-गोवा। गोवा इंटरनेशनल सेंटर में 'इन्वर लीडरशिप' विषय पर एक दिवसीय सेमिनार के आयोजन के पश्चात् समूह चित्र में उदय नायडू, डायरेक्टर, ऑपरेशन्स, इयूरा लाइन इंडिया प्राइवेट लि. के सोनियर एम्प्लोइज़, ब.कु. शोभा, ब.कु. दीपा तथा ब.कु. प्रो. ई.वी. गिरीश।



कालानी नगर-इन्दौर। व्यसन मुक्ति प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए एयरपोर्ट डायरेक्टर आर.एन. शिंदे, ब.कु. जयन्ती तथा अन्य।



कटंगा कॉलोनी-जबलपुर। 'मेरा भारत व्यसन मुक्त भारत' अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब.कु. विमला। साथ है कैसर रोग विशेषज्ञ डॉ. आशीष गुप्ता, हृदय रोग एवं मधुमेह विशेषज्ञ डॉ. विशाल कास्टवार तथा नव ज्योति नशा मुक्ति केंद्र के संचालक हेमन्त सोलंकी।



मुम्बई-मल्लाड। 'विश्व तन्माकू निषेध दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन ब.कु. दिव्या, ब.कु. कुन्ती, प्ले बैक सिंगर शान, रेशालर एंड एक्टर संग्राम सिंह, रोटीरी क्लब मुम्बई वेस्ट कोस्ट के प्रेसिडेंट विकास उपाध्याय तथा अन्य।



दिल्ली-राजीव नगर। नवज्योति इंडिया फाउण्डेशन के एम्प्लोइज़ के बीच आध्यात्मिक ज्ञान का संचार करने के कारण एनुअल कॉन्वोकेशन में डॉ. किरण बेदी द्वारा ब.कु. पूर्णमा को सर्टिफिकेट प्रदान किया गया।



## एकाग्रता से होता है क्षमता का निखार- साहा

**भिलाई नगर।** सफलता प्राप्त के लिए लक्ष्य निर्धारित व मन को एकाग्र कर चलते रहना है। हर एक के अंदर क्षमता है, जिसे बाहर निकालने के लिए यह शिविर महत्वपूर्ण है। उक्त उद्गार एस.के. साहा, अधिशासी निदेशक, भिलाई इस्पात संयंत्र ने ब्रह्माकुमारीज

विषय पर बच्चों को बताया कि यदि आपकी सोच श्रेष्ठ है तो आप शहंशाह हो क्योंकि सोच के ऊपर ही जीवन का मूल्य है। सॉरी और धन्यवाद दो ऐसे जादुई शब्द हैं जो जीवन में हमें सदा आगे बढ़ाते हैं। ट्रैफिक ट्रेन सी.दिनकर ने बच्चों को ट्रैफिक के नियमों के बारे



**भिलाई नगर।** एस.के. साहा, अधिशासी निदेशक, भिलाई इस्पात संयंत्र, ब्र.कु. आशा, डॉ. सुबोध साहा, बाल रोग विशेषज्ञ, ब्र.कु. हेमा, यू.एस. गुप्ता, प्रसिद्ध उद्योगपति तथा विज्ञेता बच्चे।

द्वारा कक्षा सातवीं एवं आठवीं के विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए आयोजित ग्यारह दिवसीय समर कैम्प उत्कर्ष-14 के उद्घाटन अवसर पर व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि कपड़े को तो साबुन से धोकर साफ किया जा सकता है लेकिन मन का कालापन खत्म करने

में बताया तथा प्रसिद्ध कलाकार महेश चतुर्वेदी ने बच्चों को पेंटिंग के टिप्स दिये व प्रतियोगिता भी कराई। विभाष उपाध्याय तथा उनके साथियों द्वारा 'पंपेट शो' के माध्यम से कई प्रकार के मूल्यों को जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी गई।

समर कैम्प के समापन समारोह में



के लिए सबका भला सोचें। मीडिटेशन तथा भगवान पर आस्था द्वारा मन का कालापन खत्म किया जा सकता है।

ब्र.कु. आशा, सेवाकेन्द्र संचालिका ने कहा कि बच्चों को देखकर सबका दिल खुश हो जाता है। दुनिया की सबसे बड़ी सम्पत्ति है खुशी। आप बच्चे सबको खुशी देनेवाले हो इसलिए असंभव हमारे शब्दकोश में न हो, जीवन में जहां दृढ़ता है वहां सफलता है ही। समर कैम्प के अंतर्गत ब्र.कु. प्राची ने 'मूल्यों से मूलवान बनेंगे', प्रो. श्रद्धा स्वने ने 'जीवन में लक्ष्य निर्धारण', ब्र.कु. तारिका ने 'श्रेष्ठ कर्मों द्वारा सफल जीवन' तथा 'मीडिटेशन के लिए आवश्यक बातें' आदि विषयों पर बच्चों को सरल और सहज भाषा में कहानियाँ, विडियो क्लिप व अभ्यास करवाकर समझाया।

डॉ. सुबोध साहा, बाल रोग विशेषज्ञ, जवाहर लाल नेहरू हॉस्पिटल एवं अनुसंधान केन्द्र ने बच्चों को हेल्थ टिप्स दिया, प्रसिद्ध कॉमर्स गुरु डॉ. संतोष राय ने पर्सनेलिटी डेवलपमेंट

ब्र.कु. हेमा, क्षेत्रीय समन्वयक, इंदौर ज़ोन ने अपने आशीर्वाचन में कहा कि भगवान सत्य है और उसे सत्यता पसंद है। हम जितना सच्चे रहते हैं उतना ही सर्व के प्यारे बन जाते हैं। प्रसिद्ध उद्योगपति यू.एस. गुप्ता ने अपने शुभकामना संदेश में कहा कि यह समर कैम्प बच्चों को परिवर्तन करने का बहुत ही अच्छा तरीका है। इससे हम देश में अच्छे नागरिक दे सकते हैं। समर कैम्प के समापन अवसर पर बच्चों द्वारा सुंदर नृत्य व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये तथा बच्चों व माता-पिता ने अपने बच्चों में इस समर कैम्प के दौरान आए परिवर्तन का अनुभव सुनाया। मुख्य अतिथियों द्वारा प्रतियोगिताओं में विजयी बच्चों को प्राइज व प्रमाण पत्र दिया गया। इस समर कैम्प में 300 से अधिक छात्र-छात्राओं ने लाभ लिया तथा इनमें से 80 छात्र-छात्राएँ प्रति रविवार राजयोग कक्षा में भी आकर लाभ ले रहे हैं।

**आकर्षण बनाम प्रेम का सिद्धांत** नियम वो होते हैं जो वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हों, जैसे न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत, गति का सिद्धांत। लेकिन उसमें एक सिद्धांत आकर्षण का सिद्धांत भी है जिसके प्रति लोगों का एक नज़रिया है कि हम जो कुछ भी सोचते हैं वो हो जाता है। परन्तु इसका कोई वैज्ञानिक सरोकार नहीं है। क्योंकि किसी भी विचार तथा उसकी प्रोबेन्स को हम माप नहीं सकते। अतः या तो एक अंधविश्वास हो सकता है या फिर मान्यता। कहा जाता है कि जिस चीज के बारे में आप सोचते हैं आप उसे आकर्षित करते हैं। लेकिन इसका प्रभाव यदि तुरंत होता तो हम समय नष्ट न करके उस चीज पर तुरंत ध्यान केंद्रित करते जिसे हमें प्राप्त करना है। जैसे मुझे बाइक चाहिए, कार चाहिए, मकान चाहिए! उसके हिसाब से प्रोबेन्स की सेटिंग करते और वस्तु प्राप्त हो जाती परंतु शुक्र है कि ये तुरंत काम नहीं करता। अगर काम नहीं करता तो क्यों? क्या हम कहीं कुछ गलत तरीके से तो नहीं कर रहे हैं? क्योंकि हम दिन-प्रतिदिन भिन्न-भिन्न चीजों से प्रभावित होते हैं अर्थात् आकर्षित हैं। तो क्या वो मिल जाती है? नहीं। इसका मूल कहा है, उसको तह तक चलते हैं।

### इच्छा बनाम भावना

इच्छा से भावना और भावना से आकर्षण अर्थात् प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न होती है। इच्छाओं का रूप अविस्तारित होता है, कोई सीमा नहीं है। इच्छाओं से उपजने वाली भावनायें निरंतर बदलती रहती हैं। जैसे फीलिंग के आधार पर चुना गया कार्य शायद आपको आगे बढ़ने ना दे। उदाहरण के लिए, जैसे पान की दुकान पर चार लड्डूके खड़े हैं उसमें से तीन हैं जो सिगरेट पीते हैं और एक नहीं पीता, लेकिन वे तीन उस एक का मज़ाक उड़ा रहे हैं कि ये तो अभी बच्चा है, इसको तो अभी दूध पीना चाहिए। तो उसको कैसी फीलिंग हो रही होगी! निःसंदेह गन्दी फीलिंग हो रही होगी। लेकिन जैसे ही वो पीना शुरू करता है, उसे फीलिंग अच्छी होती शुरू हो जाती है। इससे एक बात समझ आती है कि जैसे फीलिंग खराब होती है, मन उसके विपरीत अच्छी फीलिंग दृढ़ता है। उदाहरण के लिए अगर पत्नी से लड़ाई हुई तो

ऑफिस में जाकर कोई दूसरी फीमेल होगी जिससे वो बात करने लग जाए तो उसे अच्छी फीलिंग होने लगेगी या फिर वो अपनी फीलिंग बदलने के लिए खाना खाने लग जाएगी या फिर सिगरेट पीयेगा क्योंकि उसे फीलिंग अच्छी चाहिए। इससे पता चलता है कि फीलिंग्स अल्पकाल की होती हैं। इस बात को हमें अच्छी तरह मन के अंदर बार-बार धारण करनी है, तभी हम फीलिंग से लड़ सकते हैं। फीलिंग चाहे अच्छी है

**चाहे फीलिंग अच्छी है या बुरी है लेकिन ये दुनिया के लिए अगर अच्छा है तो करो, चाहे दर्द हो चाहे मज़ा आये। अगर आप छोड़ते हैं तो यह आकर्षण है और अगर नहीं छोड़ते हैं तो ये प्यार है।**

या बुरी है, ज़रूरी नहीं है कि जो फीलिंग अच्छी हो वो हमारे लिए अच्छा ही हो। अब सवाल उठता है कि कैसे निर्णय करें कि ये मेरे लिए अच्छा है या बुरा, या मेरे आसपास के लोगों के लिए अच्छा है या नहीं। फीलिंग अच्छी है तो करो, फीलिंग बुरी है तो भी करो, कहने का अर्थ है यदि फीलिंग बुरी है तो भी करो यदि वो अच्छा है हमारे या दूसरों के हित में।

**फीलिंग अट्रैक्शन बनाम लव** आज प्यार और आकर्षण में यही तो फर्क है। आकर्षण (Attraction gives you temporary pleasure but permanent pain) और प्रेम (Law of love gives you temporary pain but permanent pleasure or something beyond pleasure)। जैसे एक डांसर डांस करती है तो लोगों को बहुत अच्छा लगता है लेकिन वो यदि आकर्षित होकर डांस करती तो शायद उसे कोई पसंद नहीं करता परंतु वो डांस के प्रति समर्पित होकर उसे काम समझ कर नहीं बल्कि उससे प्रेम करती है इसलिए सिर्फ वो डांस करती है, तभी

-ब्र.कु.अनुज, डिफेन्स कॉलोनी, दिल्ली

तो लोग उसे पसंद करते हैं। आप पूरे जीवन में लाखों लोगों से आकर्षित होते हैं लेकिन आप सबसे प्यार नहीं कर सकते। जिसके लिए आप सबकुछ करने के लिए तैयार हैं वो प्यार है। फीलिंग्स के आधार पर चुना गया कार्य आपको आगे बढ़ने नहीं देगा। एक मन कहेगा छोड़ दो यार, इसमें फीलिंग ठीक से नहीं आ रही है, इसलिए कार्य नहीं करो। दर्द हो रहा है ना। यदि आपको पता चल गया है कि जो कार्य आप कर रहे हैं वो सही है तो आप उसे करिये, वही आपको सुख देगा। कहने का मतलब है कि मैं ये कार्य इसलिए नहीं करता कि ये मुझे अच्छा लगता है या मुझे अच्छी फीलिंग आती है परंतु मैं इसलिए करता हूँ कि मैं इससे प्यार करता हूँ। अगर आप अपनी पत्नी को प्यार करते हैं तो कई बार आपको अच्छी फीलिंग होगी और कई बार खराब फीलिंग होगी तो इसका मतलब ये बिल्कुल नहीं है कि आप अपने भाव बदल दें। चाहे फीलिंग अच्छी है या बुरी है लेकिन ये दुनिया के लिए अगर अच्छा है तो करो, चाहे दर्द हो चाहे मज़ा आये। अगर आप छोड़ते हैं तो यह आकर्षण है और अगर नहीं छोड़ते हैं तो ये प्यार है। अगर आप फीलिंग के आधार पर चलते हैं तो आपको लगाम एक मार्केट विज्ञापनकर्ता के हाथ में है। आज एक बाइक की एड दिखा दी तो आपकी फीलिंग बदल गई, कल उससे और अच्छी तो फीलिंग फिर बदली। आपकी फीलिंग या इमोशन, पांचों इंद्रियों के आधार पर होती हैं। आपके हाथ से आपका नियंत्रण गया। वो आपको जैसे चाहते हैं वैसा नचाते हैं। यही हो रहा है जो लोग आज दुनिया में असफल हैं वे अच्छे फीलिंग की तरफ भागते हैं और जब तक फीलिंग अच्छी है तब तक कार्य करते हैं, फीलिंग बुरी हुई छोड़ दिया। इसको हम कम्फर्ट ज़ोन (आराम पसंद स्थिति) कहते हैं। दुनिया में जो असफल हैं वे दिन में दस क्मिटमेंट करते हैं और एक भी पूरा नहीं करते। इसका आधार ही है फीलिंग। अतः पहचानो अपने उस कार्य को जिसे आप प्यार करते हैं चाहे उसमें दर्द हो या सुख मिले, बस करते जायें, करते जायें, करते जायें। इस तरह चुनाव करें आकर्षण और प्रेम ...क्रमशः

### भौतिकवादिता ..पेज 1 का शेष

विज्ञान लंगड़ा है और विज्ञान हीन आध्यात्मिकता अंधी है, दोनों का संतुलन मानव कल्याण के लिए अति आवश्यक है। महामण्डलेश्वर स्वामी आनंद चेतन जी महाराज, अध्यक्ष, आनंद कृष्णधाम कनखल ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हम ऐसे कर्म करें जिनसे सर्व को सुख मिले परंतु हमें उन कर्मों में लिप्त नहीं होना है, बंधना नहीं है। कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए स्वामी जी ने कहा कि यह बहुत ही सराहनीय

कार्य ब्रह्माकुमारीज द्वारा किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में निश्चित ही अनेकों आत्माओं का कल्याण होगा और यह कार्यक्रम और ही प्रगति की ओर जाना चाहिए।

डॉ. आदित्य नारायण पाण्डेय, प्रधानाचार्य, राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार ने अपने वक्तव्य में कहा कि यह कार्यक्रम अत्यंत लाभदायक है और उन्होंने मीना बहन से कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में भी ब्रह्माकुमारीज द्वारा किया जाये।

# “मैं” और शख्सियत - ब.कु.प्रीति

## दोस्त पाने के लिए दोस्त बनने

हम हमेशा अच्छे मालिक, कर्मचारी, जीवनसाथी, माँ-बाप और बच्चे चाहते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि हमें भी अच्छा इंसान बनने की ज़रूरत है। तज़रबा यही बताता है कि कोई इंसान पूरा नहीं होता, कोई नौकरी हर लिहाज़ से अच्छी नहीं होती और कोई जीवनसाथी भी सभी गुणों से भरपूर नहीं होता। जब हम पूर्णता की तलाश करते हैं तो हमें निराशा ही हाथ लगती है, क्योंकि तब हमारे हाथ पिछली तरह की परेशानी के बदले दूसरे तरह की परेशानी लगती है। पश्चिम में तलाक की दर बहुत ऊँची है और लोग जब दूसरी शादी करते हैं तो पाते हैं कि उनके लिए नए जीवनसाथी में पहले वाले की कमियाँ शायद न हों, लेकिन दूसरे तरह की बहुत सी कमियाँ होती हैं। इसी तरह, लोग नौकरियाँ बदलते हैं, या कर्मचारियों को नौकरी से यह सोचकर निकालते हैं कि बदले में बेहतर मिलेगी, लेकिन उन्हें पता पड़ता है कि एक कमी से छुटकारा पाया तो दूसरी गले पड़ गई।

## त्याग

दोस्ती त्याग मांगती है और इम्तिहान लेती है। दोस्ती और रिश्ते बनाए रखने के लिए त्याग, निष्ठा और समझदारी की ज़रूरत पड़ती है। त्याग बस यूँ ही की जाने वाली चीज़ नहीं है। इसके लिए अपनी आसानियाँ कुर्बान करनी पड़ती हैं। स्वार्थ की भावना दोस्ती को तोड़ देती है। हल्के-फुल्के रिश्ते तो आसानी से बन जाते हैं, लेकिन सच्ची दोस्ती बनाने और कायम रखने के लिए समय और प्रयास की ज़रूरत होती है। दोस्ती इम्तिहान की गड़ियों से गुज़रकर ही मज़बूत बनती है। हमें झूठे रिश्तों को पहचानना सीखना चाहिए।

## सुख के साथी

एक सुख का साथी उस बैक़र की तरह होता है जो आसमान साफ होने पर तो छाता उधार देता है, लेकिन बारिश होते ही उसे वापस ले लेता है। दो लोग जंगल के रास्ते जा रहे थे, तभी उन्हें एक भालू मिला। उनमें से एक तो झटपट पेड़ पर चढ़ गया लेकिन दूसरा ऐसा न कर सका। इसलिए वह ज़मीन पर मुँदें की तरह लेट गया। भालू उसके कान के पास अच्छी तरह सूँचकर चला गया। पहले आदमी ने पेड़ से उतरकर पूछा, “भालू ने तुमसे क्या कहा?” दूसरे आदमी ने जवाब दिया, “उसने कहा कि ऐसे दोस्त का विश्वास मत करो जो खतरा आने पर

उसे भुगतने के लिए तुम्हें अकेला छोड़ दे।” सच्ची दोस्ती में मदद करना, एक-दूसरे का अहसान नहीं होता। यह दोस्ती की सहज अभिव्यक्ति होता है, उसका मकसद नहीं। अगर एक-दूसरे से मदद हासिल करना दोस्ती का मकसद बन जाए, तो मकसद खत्म होने पर दोस्ती भी खत्म हो जाती है। रिश्ते अपने आप नहीं बन जाते, उन्हें बनाने में समय लगता है। रिश्ते ईर्ष्या, स्वार्थ, अहंकार और रूखें व्यवहार की वजह से नहीं, बल्कि दयालुता, आपसी समझ और आत्मत्याग के आधार पर बनते हैं।



**सहानुभूति और समानुभूति में क्या अंतर है? सहानुभूति का मतलब है, “मैं समझता हूँ, तुम्हें कैसा महसूस हो रहा है।” समानुभूति का मतलब है, “तुम्हें जो महसूस होता है वह मुझे भी महसूस होता है।” ये दोनों मन की ज़रूरी भावनाएँ हैं, लेकिन इन दोनों में से दूसरों के भावों को महसूस करना ज़्यादा महत्वपूर्ण है।**

रिश्तों को महत्व देकर उन्हें गंभीरता से लेना चाहिए और बार रिश्ते बन जाएँ तो उन्हें पौधों की तरह सींचना चाहिए। याद रखें, कोई भी पूर्ण नहीं होता।

## दूसरों की भावना को महसूस करें

दूसरे से किए गए और अपने साथ किए गए नाजायज़ व्यवहार को हम अलग-अलग तराजू पर तोलते हैं। किसी अच्छी शख्सियत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण गुण दूसरों की अनुभूतियों को समझना है। जिनमें यह गुण होता है वे खुद से पूछते हैं, “मुझे तब कैसा महसूस होगा जब कोई दूसरा मेरे साथ ऐसा व्यवहार करेगा?”

## एक पिल्ला

## - सूचना-

ग्लोबल अस्पताल माउण्ट आबू, आबू रोड तथा एस.एल.एम. ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज, आबू रोड में आवश्कता है -

1. रजिस्ट्रार ऑर्थोपेडिक्स/मॉलॉजी, योग्यता:- एम.एस./ डी.एन.बी. (ऑर्थोपेडिक्स/मॉलॉजी) के बाद का कम से कम तीन वर्ष का अनुभव।
2. आयुर्वेद स्पेशियलिस्ट, योग्यता:- बी.एम.एस./ एम.डी. (आयुर्वेद) पंचकर्म का अनुभव।
3. मेडिकल ऑफिसर, योग्यता:- एम.बी.बी.एस./ सरकारी रिटायर्ड डॉक्टर भी आवेदन कर सकते हैं।
4. क्लिनिकल इन्सट्रक्टर, योग्यता:- बी.एस.सी. (नर्सिंग) सम्बद्ध नर्सिंग काउंसिल में रजिस्ट्रेशन अनिवार्य।
5. ऑफिस असिस्टेंट, योग्यता:- 12वीं पास, ऑफिस कार्य का अनुभव।

ई-मेल:- ghrchrd@gmail.com

एक बच्चा पालतू जानवरों को दुकान से एक पिल्ला खरीदने गया। वहाँ चार पिल्ले एक साथ बैठे थे जिनमें से हर एक की कीमत 50 डॉलर थी। एक पिल्ला कोने में अकेला बैठा हुआ था। उस बच्चे ने जानना चाहा कि क्या वह उन्हीं बिकाऊ पिल्लों में से एक था? दुकानदार ने जवाब दिया हाँ, मगर वह अपाहिज है और बिकाऊ नहीं है। बच्चे ने पूछा? उसमें क्या कमी है? दुकानदार ने बताया कि बचपन से ही पिल्ले की एक टांग बिल्कुल खराब है और उसके पैर के पास के अंगों में भी खराबी है। बच्चे ने पूछा आप इसके साथ क्या करेंगे? उसको जवाब मिला कि उसे हमेशा के लिए सुला दिया जाएगा। बच्चे ने दुकानदार से उस पिल्ले के साथ खेलने की इजाज़त मांगी और दुकानदार ने हाँ कह दिया। बच्चे ने पिल्ले को गोद में उठा लिया और वह पिल्ला उसके कान चाटने लगा। बच्चे ने फैसला किया कि वह उसी पिल्ले को खरीदेगा।

दुकानदार भी बच्चे की ज़द के आगे झुक गया। बच्चे ने दुकानदार को 2 डॉलर दिए और बाकी के 48 डॉलर लेने अपनी माँ के पास पहुँचा। दुकानदार ने जाते हुए बच्चे से पूछा कि वह क्यों अपने 50 डॉलर इस पिल्ले पर व्यर्थ गंवा रहा है जबकि इतने में एक अच्छा पिल्ला खरीद सकता है। बच्चे ने कुछ नहीं कहा पर अपने बाएँ पैर से पैट उठाई और उस पाँव में लगी ब्रेस उस दुकानदार को दिखाई। दुकानदार समझ गया और बच्चे को पिल्ला ले जाने की अनुमति दी।

## हमदर्द वें

जब आप दुःख बाँटते हैं तो यह कम हो जाता है, जब आप सुख बाँटते हैं तो वह बढ़ जाता है। सहानुभूति और समानुभूति में क्या अंतर है? सहानुभूति का मतलब है, “मैं समझता हूँ तुम्हें कैसा महसूस हो रहा है।” समानुभूति का मतलब है, “तुम्हें जो महसूस होता है वह मुझे भी महसूस होता है।” ये दोनों मन की ज़रूरी भावनाएँ हैं, लेकिन इन दोनों में से दूसरों के भावों को महसूस करना ज़्यादा महत्वपूर्ण है।

जब हम अपने ग्राहकों, मालिकों, कर्मचारियों और परिवार के लोगों के मनोभावों को खुद भी महसूस करते हैं तो हमारे रिश्ते कैसे हो जाते हैं? वे और अच्छे हो जाते हैं। आप किसी व्यक्ति, समाज या देश के चरित्र को पहचान कैसे करते हैं? यह बहुत आसान है। सिर्फ यह देखिए कि व्यक्ति या समाज इन तीन तरह के लोगों से किस तरह पेश आता है - 1- अपाहिज, 2- बुर्ज़ा 3- अपने जूनियर यही लोग क्यों? क्योंकि वे लोग अपने अधिकारों के लिए बराबरी में खड़े नहीं हो पाते।



**रतलाम-म.प्र.** विश्व नशा मुक्ति दिवस पर आयोजित प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए महापौर शैलेन्द्र डागा, जिला कांग्रेस अध्यक्ष राजेश शर्मा, पतंजली नशा मुक्ति के श्री शर्मा व ब.कु. सविता।



**तोशाम-हरियाणा** विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर स्कूली बच्चों को शायत दिलाते हुए ब.कु. सुनीता।



**भावानगर-किन्नोर(हि.प्र.)** सिलाई सेंटर की महिलाओं को ईश्वरीय ज्ञान देने के पश्चात् समूह चित्र में ब.कु. सरस्वती।



**दुमका-झारखण्ड** झारखण्ड के माननीय मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन एवं नगर अध्यक्ष श्रीमती अमिता रक्षित को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. कुसुम। साथ ही ब.कु. जयमाला।



**यादिकी-आ.प्र.** यादिकी मंडलम प्रोग्राम के अंतर्गत 'योगिक खेती, ड्रग्स एडिक्शन, मेडिसिन और परमात्म संदेश' विषय पर आयोजित रैली का शुभारंभ करते हुए प्रसाद, फादर ऑफ चर्च, अचलम गुरु पदना, बैंक मैनेजर नारायण, ब.कु. रेणुका तथा अन्य।



**न्यू खुसिंपार-भिलाई** कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ओ.पी.श्रीवास्तव, ब.कु. नेहा तथा अन्य।

## वर्तमान में भी वही महाभारत काल चल रहा है।

दूसरी एक पारिवारिक स्थिति में कौरव और पांडव एक ही परिवार के सदस्य थे। आज की दुनिया में भी यह देखा जाता है कि दिन-प्रतिदिन परिवार टूटते जा रहे हैं। छोटे-छोटे परिवार होने लगे हैं। पहले जिस तरीके से संयुक्त परिवार में रहते थे, आज उनमें इकट्ठा रहने की शक्ति नहीं है। परिवार में माता-पिता जिनके मोह के कारण ज्ञान चक्षु बंद हो जाते हैं। धर्म तथा ज्ञानार्जन करने वाले लोगों को पाँच गाँव तो छोड़ो सुई की नोक के बराबर भी जगह देने को तैयार नहीं होते हैं। भावार्थ यह है कि न वे अपने मन में स्थान देना चाहते हैं और न ही उसको सुख से रहने देना चाहते हैं। अभिमान तो इतना है कि चाहे कुल का नाश हो जाए तो भी घृणा, द्वेष, क्रोध, अन्याय, प्रतिशोध की भावना को वे छोड़ना नहीं चाहते हैं। इस तरह पारिवारिक समस्याएँ सिर्फ उस समय (महाभारत के समय) थीं ऐसा नहीं है। वर्तमान में भी वही महाभारत काल चल रहा है। इस समय में भी हर परिवार के अंदर किसी न किसी रूप से ये समस्या आती ही रहती है। इसलिए ऐसी समस्याओं को हल करने के लिए जिस समाधान की आवश्यकता है, वह भी श्रीमद्भगवद्गीता से मिलती है। यह वही महाभारत का समय है, ऐसा हम क्यों कहते हैं? क्योंकि जैसे महाभारत के अन्तिम अध्याय में ये बात लिखी गई है कि जब घर-घर में महाभारत होगा तब समझना को महाभारत काल पुनः आ गया है। आज हर घर में यही महाभारत

कुसंग से बड़े-बड़ों का पतन हो गया है। बर्बाद होने वाले लोगों की संगत को बारीकी से देखिएगा। पाएंगे कि जिन लोगों के साथ वे उठते-बैठते थे वे ही उनके पतन का कारण बने। मनुष्य का भविष्य उसकी संगत पर आधारित है। जो लोग आपको अच्छे लगते हों, पर यदि उनके साथ आपको कुसंग की बद्दु आती हो तो तुरंत दूरी बना लें। आज सार्वजनिक जीवन में हमें अनेक लोगों से मिलना-जुलना पड़ता है। कामकाज में कड़े लोगों के साथ लंबा वक्त भी बिताना होता है। कुछ लोगों की बातों से

वाली स्थिति है जहाँ भाई-भाई, पिता-पुत्र इकट्ठा नहीं रह सकते, इस तरह से परिवार टूटने लगते हैं। मोह के कारण, जब इंसान के ज्ञान चक्षु-बंद हो जाते हैं तब वो समझ नहीं पाता है कि उसको क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए? क्या सही है और क्या गलत है? वह भी समझ में नहीं आता है।

तीसरा, जैसा कहा गया है कि यह एक सामाजिक स्थिति का समाधान भी है। आज के समाज में भी अगर देखा जाए तो शकुनी जैसे पात्र देखने का मिलते हैं।

महाभारत के समय तो शायद एक ही शकुनी था परंतु आज के समाज में तो कितने शकुनी हो गए हैं, हर मोड़ पर एक शकुनी बैठा है। जो कई परिवारों के बीच फूट डालता रहता है। समाज में शकुनी जैसे पात्र, अर्थात् विकर्म तथा कुकर्म के प्रति अंधा समाज जो धर्म-अधर्म, कर्तव्य-अकर्तव्य, भलाई-बुराई, न्याय-अन्याय को परखने वाले चक्षु नहीं रखते हैं। कई बार ऐसे शकुनी का साथ देने के लिए भी लोग चल पड़ते हैं या आगे बढ़ जाते हैं। कई बार सामाजिक परिस्थितियाँ भी हमारे सामने इस प्रकार से आ जाती हैं कि हमें समझ में ही नहीं आता कि इसे पार कैसे किया जाए? ऐसी सामाजिक परिस्थिति का समाधान भी श्रीमद्भगवद्गीता में मिलता है। साथ ही

हमें लगाव जाग जाता है। वे खराब होते हुए भी हमें प्रभावित करते हैं। मन को गंदी और

### भीतर के कुसंग से खुद को बचाएँ

गलत बातें पसंद हैं, इसलिए वह कुसंग की ओर तुरंत लुढ़कता है। कुसंग का मतलब केवल आचरणहीन व्यक्तियों के साथ रहना ही नहीं है, नकारात्मक विचार वालों से भी दूरी बनाए रखें। जो लोग उदास हों, जिंदगी के यथार्थ से मुह मोड़कर शुरुमूर्ग की तरह गर्दन गाड़ चुके हों तो उनसे सावधान हो जाएँ हमेशा ऐसे लोगों का संग करें जिन्होंने

साथ जैसा कहा गया है कि इसमें हमें एक राष्ट्रीय स्थिति का समाधान भी प्राप्त होता है। धृतराष्ट्र का विवरण इस प्रकार है कि धृतराष्ट्र अर्थात् जो राष्ट्र को धृत भावना से हड़प कर बैठा है, पारिवारिक बल से अपना अधिकार जमाए हुए है, जो बल को दृष्टि से अंधा है और जहाँ विशेषकर मानसिक और आत्मिक अंधत्व होता है वह बहुत ही भयानक है। आज राष्ट्र में भी यही मानसिक और आत्मिक-अंधत्व प्रकट होता जा रहा

### गीता ज्ञान का

### आध्यात्मिक

### रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा



है। जब इस तरह की स्थिति आ जाती है, तब परमात्मा को आकर के इसका समाधान देना पड़ता है। इसी तरह आज संसार ऐसी विशेष संकटमय स्थिति से गुजर रहा है, जब स्वयं भगवान इस धरा पर आकर इसके इतिहास को एक नया मोड़ देते हैं, फिर से ज्ञान देते हैं और मन को विषय तथा व्यक्तियों के मोह से निकालकर, योगयुक्त बनने की प्रेरणा देते हैं। -कर्मशः

जीवन के रोमांच को बनाए रखा है। जो जीवन के प्रति अत्यधिक आशान्वित रहते हैं। जिनको बातचीत में ही हिम्मत झलकती हो, लेकिन मामला यहाँ खत्म नहीं हो जाता। आप बाहर से अच्छी संगत तब ही रख पाएँगे, जब आप भीतर से मन को कुसंग से बचाएँगे। हमारे मन को कुसंग करने के लिए बाहरी लोगों की जरूरत नहीं पड़ती। वह भीतर ही भीतर घोर कुसंग का संसार बनाने में समर्थ है। तो पहले खुद को भीतर बचाएँ, फिर बाहर की तैयारी करें।

उन्होंने आगे कहा कि अगर कोई व्यक्ति हमसे गलत व्यवहार करता है लेकिन यदि फिर भी हमारा सर्व के साथ व्यवहार अच्छा ही रहे तो हमारी दुवाओं का खाता हमेशा भरपूर रहेगा और जहाँ दुवाएँ साथ होती हैं तो कोई भी हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकता। इस कार्यक्रम का उद्घाटन विधायक भरत पटेल, मेयर सोनल सोलंकी तथा शुगर फैक्ट्री एवं वलसाड जिला सारकारी बैंक के चेयरमैन अरविंद पटेल ने किया।

ब्र.कु. रंजन ने ब्र.कु. शिवानी तथा कार्यक्रम में आए गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। ब्र.कु. रोहित ने विद्यालय का परिचय देते हुए कहा कि करीब 140 देशों में 9000 सेवाकेन्द्रों के माध्यम से बहनों द्वारा संचालित यही एकमात्र संस्थान है।

लाने पर जीवन में प्रेम, शांति, सहयोग, इमानदारी, सम्मान, करुणा, दया, सत्यता, विनम्रता, सहनशीलता, निर्भयता और साहस आदि विभिन्न मूल्यों का समावेश होता है। आध्यात्म को किसी भी सूरत में नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए।

ब्र.कु. शीलू, मुख्यालय संयोजक ने राजयोग का अभ्यास कराते हुए सभास्थल में बैठे सहभागियों को शांति की गहन अनुभूति कराई।

डॉ. आर.पी. गुप्ता, मूल्य शिक्षा प्रशिक्षण संयोजक तथा ब्र.कु. सुमन ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किये।



**नरसिंगपुर-म.प्र.**। किसान सम्मेलन का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए विधायक जालम सिंह पटेल, मंडी अध्यक्ष रविन्द्र पटेल, ब्र.कु. सुमंत, ब्र.कु. विष्णु, ब्र.कु. कुसुम च ब्र.कु. गीता।



**सादुल शहर-घडसाना(राज.)**। राजयोग शिविर का शुभारंभ करते हुए पूर्व विधायक पवन दुग्गल, पूर्व व्यापार मंडल अध्यक्ष चन्द्रभानु लेखा, सरपंच कान्ता मिहड़ा, पंचायत समिति विकास अधिकारी अमित जैन, ब्र.कु. माधवी, ब्र.कु. सुषमा तथा अन्य।



**सोनई-महा.**। विधायक शंकर राव गडक पाटिल को उनके जन्मदिन पर ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए ब्र.कु. उषा।



**शांतिवन-आवू रोड**। सेन्ट्रल ट्रेनिंग कॉलेज, महाराष्ट्र से आए सहायक कमाण्डेंट ट्रेनिंग, के.पी.पु.बल, को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में डिप्युटी कमाण्डेंट पुष्कर भारद्वाज, ब्र.कु. डॉ. सविता, ब्र.कु. भूपाल, शांतिवन प्रबंधक, ब्र.कु. दीपक तथा अन्य।



**दिल्ली-पालम पुरी**। संसद सदस्य परवेश वर्मा को मुबारकबाद देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगत देते हुए ब्र.कु. सुदेश। साथ हैं सुरेन्द्र मटियाला, सह संयोजक, ओ.बी.सी. प्रकोष्ठ, दिल्ली, भाजपा प्रदेश।

**मनुष्य खुद...पेज 1 का शेष...** श्रेष्ठ कर्म से दुवाओं के साथ धन तो अपने आप ही आता रहेगा। एक उदाहरण देकर कहा कि मान लो एक फल वाला फल बेच रहा है। आज उसके पास ठीक फल नहीं है, कोई ग्राहक आता है तो वह कहता है कि आज मेरे पास ठीक फल नहीं है, आप दूसरे फल वाले से फल ले लो। देखने में आता है कि आज उसका नुकसान हो रहा है लेकिन वह ग्राहक का फायदा सोचता है खुद का नहीं। ग्राहक कितना खुश होता है और उसकी इमानदारी की बात पांच लोगों को सुनाता है। वही ग्राहक फिर दूसरी बार फल लेने किसके पास जाएगा? तो साथ में और पांच लोग भी उसी दुकानदार के पास फल लेने जाएँगे, तो इस रीति से उसके पास धन भी आया और दुवाएँ भी आई।

**व्यावहारिक - पेज 1 का शेष...** जो जरूरत है।

ब्र.कु. मृत्युंजय, उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग ने कहा कि विश्वविद्यालयों के सामूहिक प्रयासों से मूल्यों को पुनर्स्थापना के लिए नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा पर हर संभव बल दिया जाना आवश्यक है। ज्ञान वही श्रेष्ठ होता है जो हमारे चरित्र को श्रेष्ठ बनाता है व जीवन को दिव्य बनाता है। डॉ. हरीश शुक्ला, राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग ने कहा कि ईश्वर के सत्य ज्ञान में ही शक्ति है। राजयोग के जरिए ज्ञान को आचरण में

# कथा सरिता

# घाटे की विदाई

एक गांव में देवीलाल नाम का बेईमान दुकानदार था। वह सामान में मिलावट करता था। जो एक बार सामान ले जाता, दोबारा उसके पास नहीं आता था। उसका धंधा मंदा होने लगा। एक दिन उसने पत्नी से कहा - 'बहुत कोशिश करने पर भी दुकान में बिक्री नहीं हो रही है।'

पत्नी ने सारी बात सुनने के बाद कहा - 'तुम सामान में मिलावट करते हो। इसलिए लोग हमारी दुकान पर नहीं आते। मिलावट बंद कर दो।' देवीदयाल को पत्नी की बात ठीक लगी। उसने मिलावट करना छोड़ दिया। ईमानदारी से धंधा करने लगा। माहकों की इज्जत करता और कहता - 'सामान खराब निकले, तो लौटा देना।' धीरे-धीरे देवीदयाल ने ग्राहकों का विश्वास जीत लिया। बिक्री बढ़ने लगी। थोड़े ही दिनों में उसकी आर्थिक हालत ठीक हो गई। उसके तीनों बच्चे पढ़ने लगे। किसी बात की कमी न रही। एक दिन देवीदयाल को दुकान पर एक फटेहाल आदमी आया। देवीदयाल ने उससे पूछा - 'क्यों भाई, क्या चाहिए?' परन्तु वह चुपचाप खड़ा होकर उसे घूरता रहा। बार-बार पूछने पर भी वह कुछ नहीं बोला। उसकी सूरत देखकर देवीदयाल डर गया। भीख देने लगा तो उसने भीख लेने से भी इंकार कर दिया। देवीदयाल सहमकर बोला - 'भाई न तुम शिक्षा ले रहे हो, न कोई सामान और न ही जा रहे हो, आखिर तुम कौन हो? वह हंसते हुए बोला - 'मैं घाटा हूँ। आज जाऊंगा, तो कल फिर

आऊंगा। तुम्हारी दुकान में बहुत दिन से मुनाफा हो रहा है। लक्ष्मी चंचल है। एक के पास कभी नहीं रहती।' देवीदयाल ने उसके चरण पकड़ लिए। क्षमा मांगने लगा। घाटे ने कहा - 'मैं आऊंगा तो जरूर। हाँ, तुम कोई एक चीज मुझे मांग सकते हो।' देवीदयाल चिंता में पड़ गया कि 'क्या मांगूँ?' उसने एक दिन का समय मांगा। उदास देवीदयाल घर पहुंचा। पत्नी और बच्चों को सारी बातें बताईं। पत्नी ने सलाह दी - 'आपको दुकान मांग लेनी चाहिए।' देवीदयाल ने सोचा - 'जब घाटा होगा, तो दुकान में भी होगा।' उसने बड़े बेटे से पूछा। उसने कहा - 'पिताजी, उससे रुपए मांग लीजिए।' यह बात भी देवीदयाल को नहीं जंची। अब बड़ी बेटी ने कहा - 'दो वक्त का भोजन मांग लीजिए। भूख तो नहीं रहना पड़ेगा।' आखिर में सेठ ने अपनी छोटी बेटी से सलाह मांगी। उसने कहा - 'आप उससे कहिए, तू भले ही रोज आ, पढ़ हम पहले की तरह प्रेम, शांति व ईमानदारी से अपना काम करते रहे।' यह बात देवीदयाल को ठीक लगी। दूसरे दिन जब वह अपनी दुकान पर गया, तो घाटा उसका इंतजार कर रहा था। उसने घाटे से छोटी बेटी की सलाह के अनुसार आशीर्वाद मांगा। यह सुनकर घाटा चुप हो गया और जाने लगा। देवीदयाल ने हैरान होकर पूछा - 'आप कहाँ जा रहे हैं?' घाटा मुस्कराकर बोला - 'जहाँ प्यार, शांति और ईमानदारी की बातें हों, वहाँ मेरा क्या काम।'

अमेरिका के अश्वेत आंदोलन के प्रमुख नेता मार्टिन लूथर किंग का बचपन में माइकल किंग नाम रखा गया था। छह वर्ष की छोटी उम्र में ही इन्हें अश्वेत-अश्वेत

भेदभाव का कड़वा अनुभव हुआ। बालमन इसे देख

## मार्टिन लूथर किंग की उदारता

विचलित हो उठा। वे हमेशा उसके बारे में सोचा करते। तब उनके पिता ने प्रोटेस्टेंट पंथ के संस्थापक मार्टिन लूथर की जीवन कथा सुनाई और कहा, 'आज से तुम्हारा नाम मार्टिन लूथर किंग होगा।' तभी से मार्टिन ने अश्वेत-अश्वेत भेदभाव के विरुद्ध आंदोलन छेड़ने की कसम खाई। व्यक्त होते-होते वे अपने मिशन में जुट गए। इसी क्रम में एक बार किसी सार्वजनिक सभा में मार्टिन लूथर भाषण दे रहे थे। उनके दुरमन भी कम नहीं थे। वहीं सभा में मौजूद किसी दुरमन ने उन पर जूता दे मारा। जूता मार्टिन के पास जाकर गिरा और सभा में खलबली मच गई। सभा के आयोजक घबरा गए, किंतु

मार्टिन शांत भाव से खड़े रहे। फिर उन्होंने जूते को बहुत स्नेह से उठाते हुए कहा, 'वह देश धन्य है, जहाँ के वासी अपने खिदमतगारों

का इतना खयाल रखते हैं। पैदल चलने वाले मुझे जैसे तुच्छ

सेवक को यह जूता देकर किसी कृपालु ने बड़ी उदारता का परिचय दिया है, किंतु खेद है कि यह सिर्फ एक पांव का है। मेरा उन सज्जन से आग्रह है कि वे दूसरा जूता भी देने की कृपा करें। मैं उनका आभारी रहूँगा। जूते तो जोड़ी होने पर ही काम देते हैं।' मार्टिन लूथर किंग की विनम्रताभरी बातें सुनकर उनके दुरमन हैरान रह गए और सभा उनके जयकारों से गूँज उठी। अपने विरोधियों की ओछी हरकतों पर शांत व प्रसन्नचित्त रहकर सर्वथा संतुलित प्रतिक्रिया देने वाले ही सच्चे जननायक बन पाते हैं, क्योंकि नेतृत्व करने वालों को इस प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

मेले में दूर-दूर से झांकियाँ आई थीं। कुछ बड़े रथों पर, कुछ छोटे रथों पर। जिनके पास पैसा था, वे बड़े-बड़े रथों में देवताओं को सजाकर लाए थे। कुछ रथों में कई घोड़े जुते थे, तो कुछ में बैल। एक छोटा-सा रथ भी उस जुलूस में शामिल था। उसमें छोटी-सी एक झांकी थी। झांकी कपड़े व आभूषण से सजी थी। उस रथ में एक

ऐसा बैल जुता था जिसने पहली बार इतना बड़ा मेला देखा था, इसलिए वह बहुत एंठ-एंठ कर चल रहा था। सड़क के दोनों ओर हजारों नर-नारी खड़े देवताओं को प्रणाम करके उनकी जय-जयकार भी बोल रहे थे और फूलों की वर्षा भी कर रहे थे। उस बैलगाड़ी पर सजी झांकी बड़ी मनोरम थी। इसलिए लोग उसके आगे भी हाथ जोड़ रहे थे। बैल मन-ही-मन प्रसन्न हो रहा था कि लोग उसके आगे स्टार्मवेल नामक एक पत्रकार थे। उनके विषय में कहा जाता है कि वे जब भी किसी का साक्षात्कार लेते थे तो सामने वाले की नितांत निजी बातों को अक्खड़पन के साथ बोल देते थे। एक बार स्टार्मवेल को श्रीकृष्ण मेनन का

## बैवकूफ बैल

साक्षात्कार लेना था। उन्होंने आक्रामक लहजे से शुरुआत की, 'मिस्टर मेनन! आपका स्वागत है। हम सभी जानते हैं कि आपने अपने जीवन की शुरुआत बहुत निचले स्तर से की। आप स्कूल में वांच स्काउट थे। एक अंग्रेज महिला ने आपको अपने संरक्षण में ले लिया। उन्होंने ही आपको लंदन भेजा, जहां से आपने कानून व अर्थशास्त्र की शिक्षा प्राप्त की। फिर जब आप पढ़ लिखकर भारत आए तो वकालत के लिए संघर्ष किया। इसी दौरान नेहरू की निगाह आप पर गई और उन्होंने आपको सही मुकाम दिलाया। आप आज भी उनके प्रिय हैं। नेहरू के प्रधानमंत्री बनने के बाद आपको मंत्रिमंडल

भी हाथ जोड़ रहे हैं और झुक-झुककर प्रणाम कर रहे हैं। वह घमंड से फूला नहीं समा रहा था। उसे लग रहा था कि वह कितना महान है कि हजारों लोग उस पर फूल बरसा रहे हैं। घमंड में फूलकर बैल

को लगने लगा कि गाड़ी को खींचने का काम तो बहुत बुरा है। उसकी प्रतिष्ठा के बराबर नहीं है। उसने आव देखा न ताव, अपनी पिछली दोनों लातें उछाल दीं। टांगों के उछलते ही रथ उलट गया और झांकी ज़मीन पर आ गिरी। गाड़ी के साथ चल रहे लोगों को बैल की इस हरकत पर बहुत गुस्सा आया। उन्होंने बैल की पीठ पर डंडे बरसाने शुरु कर दिए। इतन डंडे पड़े कि बैल अधमरा हो गया। तब बैल को होश आया कि लोग उसे नहीं, उस पर सजी झांकी को प्रणाम कर रहे थे।

मैं लिए जाने की चर्चा चारों ओर हो रही है। आप खाक से उठकर आसमान की बुलंदियाँ छू रहे हैं। किंतु मिस्टर मेनन! आप मुझे बताइए कि क्या यह सच है कि आप कम्युनिस्ट हैं? मेनन ने शांत और दृढ़ स्वर में उत्तर

## स्टार्मवेल की बोलती बंद की

दिया, 'प्रशंसा के लिए आभार, मिस्टर स्टार्मवेल! बदले में मैं आपकी भी प्रशंसा करूँगा। आप भी सड़कों पर अखबार बेचकर नीचे से ऊपर उठे हैं। मैंने सुना है कि आप मोटा वेटन पाते हैं, किंतु आप मुझे यह बताइए कि क्या आप वास्तव में अवैद्य संतान हैं?' मेनन के उत्तर ने स्टार्मवेल की बोलती बंद कर दी और उन्होंने विषय बदल दिया। साक्षात्कार लेने वाले को संतुलित दृष्टि व व्यवहार अपनाना चाहिए। साक्षात्कार देने वाले की प्राइव्सी का पूर्ण सम्मान करते हुए उसके अन्य महत्वपूर्ण पक्षों पर विवेकसम्मत ढंग से वार्तालाप करना चाहिए।



गंधीनगर-गुज.। आनंदी बेन पटेल का गुजरात की प्रथम महिला मुख्यमंत्री बनने पर अभिनंदन करते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय, माउण्ट आबू, ब.कु. सरला, क्षेत्रीय निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज, ब.कु. कैलाश तथा अन्य।



दिल्ली-लाजपत नगर। माननीय राधा मोहन सिंह, यूनिवर्स मिनिस्टर ऑफ एग्रिकल्चर को माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. सपना।



छत्तरपुर। 'विश्व परिवर्तन का आधार नारी' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मंजू सिंह, वाइस चेयरमैन, नगर पालिका परिषद धुवारा, ब.कु. नीतू, ब.कु. दीपा तथा ब.कु. रूपा।



डुंगरपुर-राज.। युवा प्रभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय 'दिव्य दर्पण' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. कृति, विधायक सुशील कटारा, श्रीमती सुशील कटारा, शंकर सिंह सोलंकी, नगर परिषद सभापति सुशीला भील, ब.कु. विजयलक्ष्मी तथा अन्य।



हाथरस। 'व्यसन मुक्त भारत' अभियान का झंडी दिखाकर शुभारंभ करते हुए बटालियन कमांडेंट कर्नल धर्मवीर सिंह, ब.कु. शान्ता तथा अन्य।



कोरवा। 'बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' का उद्घाटन करते हुए आर.एस.मुकाती, जी.एम., सेंट्रल वर्कशॉप, एस.इ.सी.एल., ब.कु. रुक्मिणी तथा अन्य।